Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

अमणुण्णसमुप्पाय दुक्खमेव विजाणिया।
समुप्पामजाणंता, किह णहिति संवर ?

दुःख असयंम से उत्पन्न होता है—यह ज्ञातव्य है। जो दुःख की उत्पत्ति को नहीं जानते वे संवर (दुःख—निरोध) को कैसे जानेंगे ?

• नई दिल्ली • वर्ष 23 • अंक 33 • 23 - 29 मई, 2022 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 21-05-2022 • पेज : 20 • ₹ 10

धर्मसंघ ने मुझे आभारी बना दिया

—आचार्य महाश्रमण

जन्मभूमि पर महातपस्वी का भव्यातिभव्य युगप्रधान पदाभिषेक

धर्मसंघ महान – युगप्रधान अलंकरण से संघ मुझे और अधिक आभारी बना रहा है : आचार्यश्री महाश्रमण

सरदारशहर, १० मई, २०२२

वैशाख शुक्ला नवमी मंगलवार की भोर सरदारशहर में एक अलग रंगत लिए हुए थी। छः दशक पूर्व इसी धरा पर एक ऐसे दिव्य सूर्य का अवतरण हुआ जो आज संपूर्ण विश्व को अपनी रश्मियों से प्रकाशमान कर रहा है। अपने व्यक्तित्व, कर्तृत्व, संघनिष्ठा, अपार गुरु भक्ति, करुणा से ओतप्रोत: आचार्य महाश्रमण के रूप में यह सूर्य तेरापंथ धर्मसंघ को विश्व क्षितिज पर अलग पहचान दे रहा है। इनके प्रति राष्ट्र के सर्वोच्च नागरिक से लेकर एक साधारण बालक तक सभी नतमस्तक हो जाते हैं। सप्त वर्षीय अहिंसा यात्रा के माध्यम से भारत के २२ राज्यों के सैकड़ों शहरों सहित नेपाल और भूटान जैसे राष्ट्रों में भी अहिंसा, सद्भावना और नशामुक्ति की ऐसी अलख जगाई जिससे लाखों लोगों के जीवन का कल्याण हुआ है। इस महामानव के जीवन के ६० वर्षों की सुसंपन्नता के अवसर पर युगप्रधान पदाभिषेक महापर्व इनकी ही जन्मभूमि सरदारशहर में आयोजित हुआ।

मंगलकामना एवं भव्य स्वागत

प्रातः ४ बजे से ही जन्मस्थल पर पूज्यप्रवर को शुभकामनाएँ संप्रेषित करने की होड़ लगी हुई थी। हर कोई अपने आराध्य को जन्म दिवस और षष्टिपूर्ति की बधाई देकर अपार हर्ष की अनुभूति कर रहा था। सूर्योदय के पश्चात आचार्यप्रवर अपने जन्म स्थान से तिरंगा स्टेडियम की ओर प्रस्थित हुए तो मार्ग के दोनों और श्रद्धालुगण जयघोष लगा रहे थे। वाद्ययंत्रों की मंगल ध्वनि मानो देवताओं को भी आकर्षित कर रही थी। इस जुलूस में भारत के २३ राज्यों सहित नेपाल और भूटान के श्रद्धालु संभागी बने हुए थे। तिरंगा स्टेडियम में आचार्य प्रवर के चरण पंडाल की ओर बढ़े तो उनकी अभिवंदना में जैन संस्कारक, उपासक, मुमुक्षु बहने, समणीवृंद, साध्वीवृंद, मुनिवृंद कतारबद्ध खड़े होकर अगवानी कर रहे थे। आगम सूक्तियां, नमोत्थुणं सहित विभिन्न मंत्रों के साथ आचार्यप्रवर का अभिनंदन कर सभी अपने आपको प्रफुल्लित महसूस कर रहे थे। आचार्यप्रवर के मंच पर पधारने के साथ ही पूरा पंडाल सरदारशहर के इस महासूर्य की ज्योति किरणों से प्रकाशमान हो उठा और पूरा वातावरण जय-जय ज्योति चरण - जय-जय महाश्रमण के नारे से गुंजायमान हो गया।

समारोह का शुभारंभ आचार्यप्रवर द्वारा नमस्कार महामंत्रोच्चार के साथ हुआ। युग को नई दिशा प्रदान करने वाले महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी के युगप्रधान पद अभिषेक की प्रक्रिया ७ चरणों में चली। मुख्य मुनि महावीरकुमारजी ने चतुर्विध धर्मसंघ की ओर से इस कार्यक्रम का संयोजकीय दायित्व संभाला और आचार्यप्रवर से सिंहासनारूढ़ होने का भक्ति भरा निवेदन किया। पूज्यप्रवर के सिंहासन पर विराजमान होने पर चतुर्विध धर्मसंघ इस दृश्य को अपलक निहारकर अपने आपको धन्य महसूस कर रहा था। अग्रणी साध्वियों द्वारा नंदी श्लोकों के साथ संघ स्तुति की गई। मुख्य मुनि महावीरकुमारजी ने आचार्यप्रवर के चरणों में वंदन कर युगप्रधान पदाभिषेक प्रक्रिया का शुभारंभ किया।

पवित्रता का जागरण

प्रथम चरण में पवित्रता के जागरण के लिए पूज्यप्रवर से निवेदन किया। पूज्यप्रवर ने पवित्रता का जागरण करते हुए फरमाया कि मोहनीय कर्म के क्षय और कषाय मंदता हो तो पवित्रता का विकास हो सकता है। इसके लिए आगम में संदेश है कि उपशम को क्षीण करें, मार्दव के द्वारा अहंकार को जीते और आर्दव भाव से माया को हतप्रभ करें और संतोष के द्वारा लोभ को जीते। इसकी अनुप्रेक्षा के माध्यम से कषाय मंद होते हैं, कषाय मंदता से पवित्रता का विकास होता है। एकाग्रता निर्मलता और प्रज्ञा की चेतना हो सकती है।

चरण कमल एवं कर कमल का जलाभिषेक

पदाभिषेक के द्वितीय चरण में आचार्यप्रवर के पादांगुष्ठ एवं हस्तद्वय की अंगुलियों का मुख्य मुनि द्वारा अभिषेक किया गया। अभिषेक के पश्चात मुख्य मुनिश्री ने इस पवित्र जल को अपने मस्तक पर पवित्रता के जागरण के सूचक के रूप में लगाया एवं सभी साधु-सध्वियों को इस जल को अपने मस्तक पर लगाने का निवेदन किया।

युगप्रधान पदाभिषेक पत्र एवं वर्धापना पत्र भेंट

इसके पश्चात सकल साधु-साध्वीवृंद की तरफ से युगप्रधान पदाभिषेक पत्र का वाचन मुख्य मुनिश्री ने किया एवं आचार्यप्रवर ने इस युगप्रधान अभिषेक पत्र की अवगति लेते हुए फरमाया कि यह पत्र चतुर्विध धर्मसंघ की तरफ से सम्मान का सूचक है। आचार्यप्रवर ने शासनमाता की स्मृति करते हुए कहा कि ३० जनवरी, २०२२ को लाडनूं में साध्वीप्रमुखाजी ने इसे एक वरदानस्वरूप मुझसे माँग लिया था, मैंने भी इसे संघ की भावना के रूप में स्वीकार किया था। आज शासनमाता तो नहीं है, परंतु उनके भाव के रूप में आज धर्मसंघ ने मेरे लिए यह जो कार्य किया है। स्थूलभाषा में कहें तो संघ मुझे और ज्यादा आभारी बना रहा है, वैसे ही संघ तो महान है। यह पत्र प्रमाणिक दस्तावेज है अतः मैं इसे ससम्मान ग्रहण कर रहा हूँ।

नवीन पछेवड़ी और पचरंगी माला से वर्धापन

युगप्रधान अभिषेक पत्र प्रदान करने के पश्चात मुख्य मुनिश्री ने युगप्रधान लिखित पछेवड़ी पूज्यप्रवर को धारण करवाई। साध्वियों द्वारा हस्तनिर्मित पंचरंगी माला भी आचार्यप्रवर को धारण करवाई गई। माला धारण करवाने के पश्चात मुख्य मुनिश्री ने उद्‌घोष लगवाए। मुख्य नियोजिकाजी ने आचार्यप्रवर को नवीन रजोहरण एवं साध्वीवर्याजी ने नवीन पूंजनी पूज्य आचार्यप्रवर को भेंट की।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

एक तंत्र वाला है यह भैक्षव शासन : आचार्यश्री महाश्रमण

तेरापंथ भवन, सरदारशहर, १२ मई, २०२२

महायोगी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारे जीवन में शरीर भी है, आत्मा भी है। भौतिकता भी है और आध्यात्मिकता भी एक तत्त्व है। हमारा दृष्टिकोण भौतिकतापरक है या आत्मपरक है, यह एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है।

शास्त्रकार ने कहा कि जो एक को ही प्रमुख मानकर चलता है, एक आत्मा की ओर मुख वाला होता है। तेरापंथ धर्मसंघ में भी एक आचार्य प्रमुख होता है। आचार्य भिक्षु के शासन में उत्तरावर्ती आचार्य परंपरा चली। जहाँ बहुत सारे अपने आपको मुख्य मानने लग जाएँ, सब नेता बन जाएँ, वहाँ कठिनाई पैदा हो सकती है।

आचार्य भिक्षु के शासन तंत्र में एक तंत्र वाली बात है। उत्तरवर्ती आचार्य परंपरा भी एक प्रमुख वाली रही है। एक बार पूज्य भारमल जी स्वामी ने नियुक्ति में दो नाम लिख दिए थे, पर बाद में एक नाम निष्प्रभाव कर दिया था। २०० वर्षों बाद भी एक प्रमुख वाली व्यवस्था चल रही है। आचार्य के सिवाय किसी के भी शिष्य-शिष्याएँ नहीं होती हैं। यह हमारी संघीय व्यवस्था है।

हमारे धर्मसंघ को जो ये तंत्र प्राप्त हुआ है, वह लोकतंत्र नहीं है, एक तंत्र है। पट्टोत्सव की वर्धापना आज भी की जा रही हैं बाकी की व्यवस्थाएँ आचार्य की निश्राय में ही होती है। एक प्रमुख तंत्र में आचार्य पर भी बहुत बड़ा दायित्व आ जाता है। पद का उम्मीदवार यहाँ कोई नहीं बनता। लालसा होती है, वो खतरनाक हो सकती है, संसार में गुरु तो हर कोई बनना चाहता है, पर शिष्य बनना मुश्किल है। गुरु बनने के लिए अच्छा चेला बनने की अर्हता भी होनी चाहिए। (शेष पृष्ठ ३ पर)

१३वें पट्टोत्सव का हुआ भव्य आयोजन

तेरापंथ धर्मसंघ का आचार्य बनना एक विशिष्ट बात है : आचार्यश्री महाश्रमण

युगप्रधान समवसरण, सरदारशहर, ११ मई, २०२२

वैशाख शुक्ला दशमी, भगवान महावीर केवल्य ज्ञान प्राप्ति दिवस। आज ही के दिन वि०सं० २०६७ में वर्तमान के वर्धमान आचार्यश्री महाश्रमण जी सरदारशहर में तेरापंथ के एकादशम अधिशास्ता के रूप में पट्टासीन हुए थे। पूरे धर्मसंघ ने आपको वर्धापित किया था। आज पूरा धर्मसंघ परम पावन का तेरहवाँ पट्टोत्सव मना रहा है।

आचार्य भिक्षु के परंपर पट्टधर तेरापंथ के महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि आज वैशाख शुक्ला दशमी है। आज ही के दिन परम आराध्य भगवान महावीर ने केवलज्ञान, केवल दर्शन और निरंतराय की स्थिति को प्राप्त किया था। मोहनीय कर्म का क्षय हुआ था। भगवान महावीर का केवल्य प्राप्ति का दिवस है।

आज की ये तिथि मेरे साथ भी जुड़ गई है। मुझे धर्मसंघ के द्वारा आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के द्वारा किए गए निर्णय को औपचारिक रूप में क्रियान्वित करते हुए आचार्य पद की पछेवड़ी आज के दिन ओढ़ाई गई थी।

मैं उस चद्दर पर ध्यान दे रहा हूँ कि उस चद्दर में मानो भार का द्योतक था कि यह चद्दर आचार्य पद की चद्दर है। अमल-धवल चद्दर है। मुनि सुमेरमलजी सुदर्शन द्वारा धर्मसंघ की ओर से चद्दर ओढ़ाई गई थी।

हमारे इतने बड़े धर्मसंघ का आचार्य बनना एक विशिष्ट बात है। एक विशेष उपलब्धि है। पर मैं पद को ज्यादा महत्त्व नहीं देता। यहाँ तो आत्मा के कल्याण की बात है। आत्म साधना कितनी ऊँची है, इसका महत्त्व है। परंतु व्यवस्था तंत्र के हिसाब से आचार्य का सर्वाधिक महत्त्व है।

आत्मा की युक्ति के आधार पर आचार्य के पाँच जन्म से ज्यादा नहीं होते हैं। कारण आचार्य इतनी निर्जरा कर लेते हैं कि जैसे लोगों को चित्त समाधि देने का प्रयास करना, दीक्षा देना, अध्ययन-अध्यापन करवाना, ज्ञान देना आदि से निर्जरा हो ही जाती है। इस कारण मुक्ति जल्दी हो सकती है।

हमारे धर्मसंघ में आचार्य एक ही है, तो उनको सहयोगी भी चाहिए। हमारे कितने-कितने साधु-साध्वियाँ अपने-अपने ढंग से कितने-कितने कार्यों को संभालते हैं। व्यवस्था तंत्र में भी सहयोग लेना अपेक्षित हो सकता है, जैसे मुख्य नियोजिका जी साध्वियों की देखरेख, साध्वीवर्या समण श्रेणी की देखरेख व मुख्य मुनि लिखने आदि कार्यों से मुझे सहयोग करते हैं। चिंतन-मनन में भी सहयोग रहता है।

आचार्यों को पूर्वाचार्यों के पास रहने का मौका मिलता है। वे अपने गुरु से व्यवस्था संबंधी बातों को ग्रहण कर लेते हैं। मुझे तो दो-दो गुरुओं के पास, उनके चरणों में रहने का, देखने का, सीखने का मौका मिला। गुरु से सैद्धांतिक ज्ञान के साथ प्रशासनिक ज्ञान, अनुभव, तरीके लिए जा सकते हैं।

दायित्व तो एक बार ही मिलता है, पर उसकी अनुश्रुति प्रतिवर्ष काल के हिसाब से करते हैं। औपचारिक रूप में जन्म दिवस से ज्यादा दीक्षा का महत्त्व होता है और दीक्षा दिवस से ज्यादा पट्टोत्सव दिवस का महत्त्व है। वो दिन सिर्फ मेरा ही है, इसलिए ये दिन विशिष्ट है। असाधारण दिन है।

दिवस तो है, मेरा और मना रहे हो आप। कितनी प्रस्तुतियाँ हुई हैं। मुझे इस दिवस को मनाने में सब सहयोग दे रहे हैं। मुझे बोल-बोलकर जागरूक रहने में सहयोग कर रहे हैं। कुछ-कुछ प्रस्तुतियाँ मुझे अच्छी लगी। अच्छा विकास हुआ है। छोटे-छोटे साधु-साध्वियों में ज्ञान का विकास होता रहे।

हमारा संयम का जीवन है। हमारी ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप की साधना अच्छी चलती रहे, विकास होता रहे। हमारी निर्मलता बढ़ती रहे। श्रावक-श्राविकाओं का भी सम्यक् ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप अच्छा बढ़ता रहे। श्रावकत्व बढ़ता रहे। उपासक श्रेणी में भी कईयों ने अच्छा विकास किया है। उनमें ज्ञान भी है और समय भी लगाते हैं। आध्यात्मिक सेवा में समय लगा रहे हैं। दूसरों को भी प्रशिक्षण देते रहें। उपासक श्रेणी भी अच्छी श्रेणी है, धर्मसंघ का एक अंग है। ज्ञान-साधना का उनमें भी विकास होता रहे।

महिला मंडल द्वारा जैन स्कॉलर, तत्त्व-दर्शन के कोर्स भी अच्छे चलाए जा रहे हैं। आचार्य भिक्षु से संबंध हमारा धर्मसंघ है। गुरुओं ने मुझे इस रूप में सेवा करने का मौका दिया है। हम इस धर्मसंघ की सेवा करें और इस धर्मसंघ के माध्यम से दूसरों की सेवा करते रहें।

धर्मसंघ से जुड़ी संस्थाएँ धार्मिक-आध्यात्मिक सेवाएँ देती रहें। खूब उत्साह सभी में रहे। संघ को आगे बढ़ाने में विकास करते रहें। बारह वर्षों बाद आज का दिन सरदारशहर में मनाया जा रहा हैं यहाँ का प्रवास भी अच्छा रहा। हमारा धर्मसंघ विकास करता रहे।

पूज्यप्रवर की अभ्यर्थना में मुनिवृंद ने आचार्य स्तवन का उच्चारण किया। उपासक श्रेणी द्वारा गीतिका की प्रस्तुति हुई। खुशी दुगड़, सूरजकरण दुगड़, पूज्यप्रवर के ननिहाल पक्ष, पदमचंद पटावरी, ज्ञानशाला, मुमुक्षु बहनों ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की।

मुनि विवेककुमार जी, मुनि विनम्र कुमार जी, मुनि राजकुमार जी, मुनि मृदुकुमार जी, मुनि मनन कुमार जी, मुनि ध्रुव कुमार जी, मुनि अनुशासन कुमार जी, मुनि नम्रकुमार जी, मुनि पार्श्वकुमार जी, मुनि हितेंद्र कुमार जी, मुनि गौरव कुमार जी, मुनि वर्धमान कुमार जी, मुनि अनेकांत कुमार जी, मुनि केशी कुमार जी, साध्वी जिनप्रभाजी, साध्वी ऋद्धिप्रभाजी ने पूज्यप्रवर की अभ्यर्थना में अपने भाव अभिव्यक्त किए। साध्वीवृंद ने समुह गीत की प्रस्तुति दी। साध्वी सुषमाकुमारी जी, साध्वी मुदितयशाजी ने भी भावना अभिव्यक्त की।

समणीवृंद ने गीत, समणी जिनप्रज्ञाजी, समणी निर्मलप्रज्ञा जी, समणी विनीतप्रज्ञा जी, समणी भावितप्रज्ञाजी, समणी पावन प्रज्ञाजी, समणी नियोजिकाजी अमलप्रज्ञा जी, समणी कमलप्रज्ञा जी, समणी कुसुमप्रज्ञाजी, समणी अक्षयप्रज्ञा जी, समणी प्रणवप्रज्ञाजी ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की।

साध्वी नवीनप्रभाजी ने ६१ मुक्तक भेंट किए।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया। पट्टोत्सव का कार्यक्रम संघगान के साथ संपन्न हुआ।

एक तंत्र वाला है यह भैक्षव शासन...

(शेष पृष्ठ ३ पर)

पूज्यप्रवर की अभ्यर्थना में मुनि अर्हम् कुमार जी, मुनि प्रिंसकुमार जी, मुनि नमन कुमार जी, साध्वी प्रबुद्धयशाजी, साध्वी मैत्रीयशाजी, साध्वी ऋजुबाला जी, साध्वी प्रफुल्लप्रभाजी, साध्वी श्रुतिप्रभाजी, साध्वी काम्यप्रभाजी, साध्वी तन्मयप्रभाजी, साध्वी प्रसन्नयशाजी, साध्वी संपूर्णयशाजी, साध्वी सिद्धांतप्रभाजी, साध्वी ऋजुप्रभाजी, साध्वी समताप्रभाजी, साध्वी संगीतप्रभाजी, साध्वी मृदुप्रभाजी, साध्वी चारूलता जी, साध्वी रचनाश्री जी, साध्वी कारुण्यप्रभाजी, साध्वी भव्ययशाजी, साध्वी मुदुप्रज्ञा जी आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। साध्वी सार्थकप्रभाजी, साध्वी प्रवीणप्रभाजी, साध्वी आर्षप्रभाजी ने सामुहिक प्रस्तुति दी।

तेरापंथ महिला मंडल, संतोष बैद-गंगाशहर, बाल कृष्ण कौशिक, शीला संचेती, जिज्ञासा पींचा ने अपने विचार प्रस्तुत किए।

धर्मसंघ महान - युगप्रधान अलंकरण से संघ मुझे...

(पृष्ठ २ का शेष)

इस प्रकार विधिवत युगप्रधान पदाभिषेक के पश्चात चतुर्विध धर्मसंघ ने तीन बार प्रदक्षिणा करते हुए आचार्यप्रवर को विधिवत पंचांग प्रणतिपूर्वक वंदना की। पूज्य प्रवर की अभिवंदना में मुख्य मुनि ने अपने भाव को गीत के रूप में प्रस्तुत किया। श्रमण-श्रमणी और समणी परिवार की तरफ से वर्धापना पत्र का वाचन साध्वी कल्पलताजी ने किया एवं संपूर्ण धवल सेना ने अपने आराध्य को वर्धापना पत्र समर्पित्त किया। श्रावक समाज की तरफ से कल्याण परिषद के संयोजक के०सी० जैन ने अभिनंदन पत्र का वाचन किया एवं कल्याण परिषद पार्षदों ने इस पत्र को संपूर्ण श्रावक समाज की तरफ से आचार्यप्रवर को समर्पित किया।

युगप्रधान आचार्यप्रवर का मंगल उद्बोधन

युगप्रधान पदाभिषेक समारोह अवसर पर आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्बोधन में फरमाया की मंगल कामना दूसरों के प्रति भी की जाती है और स्वयं के प्रति भी की जा सकती है। आज मेरे प्रति मंगलभावनाएँ, मंगल कामनाएँ, मंगल शब्द अभिव्यक्त किए जा रहे हैं। आज मैंने ६० वर्षों की संपन्नता के पश्चात जीवन के सातवें दशक में उम्र के अनुसार प्रवेश प्राप्त किया है। ६० वर्षों की उपलब्धि परिपक्वता उम्र के आधार पर मानी जा सकती है। शास्त्र में भी ६० वर्ष प्राप्ति का उल्लेख किया गया है। हर प्राणी का जन्म होता है जन्म लेना बड़ी बात नहीं है विशेष बात यह होती है कि जन्म लेने के बाद आदमी करता क्या है?

विक्रम संवत् २०१६, वैशाख शुक्ला नवमी, १३ मई, १९६२ को इसी सरदारशहर में मेरा जन्म हुआ था मेरी संसारपक्षीय पूजनीय नेमाबाई-झूमरमलजी का साया मुझे मिला। संसारपक्षीय पिता का साया मुझे कम समय ही प्राप्त हुआ। ७ वर्ष की उम्र में पिता का साया उठ गया था। पिता के चले जाने के बाद जेष्ठ भ्राता सुजान मलजी सबसे बड़े थे। स्कूल में भी मुझे मॉनिटर के रूप में सेवा देने का मौका मिला, छठी कक्षा की अर्धवार्षिक परीक्षा के बाद दीक्षा का योग मिला और श्रद्धेय मुनिश्री सुमेरमलजी द्वारा मुझे और मुनि उदितकुमारजी को दीक्षित होने का अवसर मिला। गुरुकुल वास में मुझे आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ जी का विशेष आशीर्वाद मिला। गुरुओं से मुझे कार्य के क्षेत्र में आगे बढ़ने का अनुग्रह मिला। मुझे आचार्य महाप्रज्ञ के साथ आंतरिक सहयोगी और उसके पश्चात आचार्य तुलसी ने मुझे महाश्रमण के रूप में नियुक्त किया। आचार्य तुलसी ने मुझे महाश्रमण नाम प्रदान किया। गंगाशहर में मुझे आचार्य महाप्रज्ञ जी ने संघ का युवाचार्य बना दिया। उन्होंने मुझे मैदान दिया कहा कि तुम दोड़ो, खुला उड़ने के लिए आकाश दिया। इतना वात्सल्य मुझे गुरुद्वय का मिला। आचार्य महाप्रज्ञ जी के देवलोकगमन होने के पश्चात मुझे संघ का दायित्व सरदारशहर की भूमि में आचार्य के रूप में मिला। साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी का मुझे विशेष सहयोग मिला। मेरा ६० वर्ष का जीवन अनेक रूपों में बीता है। व्यक्ति को पद मिले ना मिले, पैसा ज्यादा मिले ना मिले, मान-सम्मान ज्यादा मिले ना मिले कोई खास बात नहीं परंतु आत्म कल्याण आत्मशुद्धि के मार्ग पर आगे बढ़ते रहना चाहिए। जीवन में आदर्श रखें, अच्छा जीवन जियें।

मुख्य मुनिश्री सचिव के रूप में अपनी सेवा दे रहे हैं। मुख्य नियोजिकाजी, साध्वीवर्याजी का सहयोग मुझे मिलता है। यह तीनों प्रबंधन और प्रशासन में मेरे सहयोगी है। बहुश्रुत परिषद, कल्याण परिषद, विकास परिषद का भी धर्मसंघ के विकास में योगदान मिलता है।

धर्मसंघ ने यह युगप्रधान पद देकर मुझे और आभारी बना दिया वैसे हमारे संघ में आचार्य सर्वोपरि होता है फिर यह युगप्रधान अलंकरण प्रदान कर मानो आचार्य पद के साथ आभूषण के रूप में अलंकृत कर दिया है। आचार्य तुलसी आचार्य महाप्रज्ञ जी को भी धर्मसंघ ने युगप्रधान अलंकरण दिया था। इस अवसर पर कृतज्ञता तो कैसे कहूँ यह तो बहुत छोटी बात हो सकती है। यह धर्मसंघ तो हमारा ही है। धर्मसंघ के प्रति मंगलकामना है। हम सभी सेवा साधना में आगे बढ़ते रहें। हम धर्मसंघ की सेवा करें और दूसरों की सेवा करने का भी प्रयास करते रहे। जन्मदिवस षष्टिपूर्ति के अवसर पर युगप्रधान जोड़कर इस दिवस को और अधिक महिमामंडित कर दिया है।

इस अवसर पर आचार्यप्रवर ने साधु-साध्वियों को बखशीश प्रदान की। समणीवृंद एवं श्रावक समाज को स्वाध्याय करने के लिए प्रेरित किया। आचार्यप्रवर ने फरमाया कि मेरे ज्ञान दर्शन चरित्र की निर्मलता बढ़ती रहे। मैं धर्मसंघ की एवं दूसरों की भी सेवा करता रहूँ। अपने स्वास्थ्य की अनुकूलता की भी मंगलकामना की। आचार्यप्रवर ने भगवान महावीर, आचार्य परंपरा एवं शासनमाता कनकप्रभाजी को भी भाव वंदना की। इस मंगल समारोह में महातपस्वी के चरणों में मंजू देवी दूगड़ ने ३३ की तपस्या का प्रत्याख्यान कर मंगल अवसर को और मंगलमय बना दिया।

युगप्रधान आचार्यश्री के साथ चतुर्विध धर्मसंघ ने खड़े होकर संघगान किया। इस भव्यातिभव्य कार्यक्रम का संचालन मुख्य मुनि महावीरकुमारजी और मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

युगप्रधान की अभ्यर्थना में मंगलकामनाएँ

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी ने युगप्रधान परंपरा व युगप्रधान अर्हता को बताया तो साध्वीवर्या साध्वी संबुद्धयशाजी ने आचार्यश्री महाश्रमणजी के अवदानों को व्याख्यायित किया। मुनि कुमारश्रमणजी, साध्वी सुमतिप्रभाजी, प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष बाबूलाल बोथरा व संसारपक्ष में आचार्यश्री के बड़े भाई सुजानमल दूगड़ ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। मुनिवृंद, साध्वीवृंद, समणीवृंद तथा सरदारशहर तेरापंथ समाज द्वारा पृथक्-पृथक् गीत का संगान किया गया।

मुनि धर्मरुचिजी द्वारा पूज्यचरणों में काव्यांजलि ग्रंथ समर्पित किया गया। दूगड़ परिवार और नन्हें बच्चों ने अपनी भावपूर्ण प्रस्तुति दी। स्क्रीन पर उन विडियो को भी दर्शाया गया जिसमें गुरुदेव तुलसी, आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के आचार्यश्री के प्रति आशीर्वचन, शासनमाता साध्वी कनकप्रभाजी द्वारा आचार्यश्री से युगप्रधान स्वीकार करने का निवेदन और आचार्यश्री की स्वीकृति प्रदान की थी। इस दौरान अनेक प्रदेशों के श्रद्धालुओं ने भी अपनी-अपनी ओर से पूज्यचरणों में भेंट अर्पित की।

आचार्यश्री महाश्रमण जी को युगप्रधान के उपलक्ष्य में विशेष

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण

❒ प्रो. धर्मचंद जैन, भीलवाड़ा ❒

आचार्यश्री महाश्रमण, तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अनुशास्ता या आचार्य हैं। उन्हें युवा मनीषी, महातपस्वी, शांतिदूत व उदारता के पर्याय एवं कीर्तिमान महापुरुष के नाम से जाना जाता है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के सुयोग्य उत्तराधिकारी के रूप में भी विख्यात हैं। आचार्य महाश्रमण जी को युगप्रधान अलंकरण से भी विभूषित किया गया है। युगप्रधान व्यक्तित्व वही हो सकता है, जो सद्गुणों से युक्त हो, ज्ञानवान हो, करिश्माई और आदर्श नेतृत्व वाला हो, जिसके अनुयायियों में उसके प्रति श्रद्धा की भावना हो, ऐसे व्यक्तित्व की कथनी व करनी में अंतर नहीं हो और जिसने जनजीवन का निकट से साक्षात्कार करके उसे दुर्व्यसनों से दूर रहने का एक भगीरथ आंदोलन चलाकर उसमें सफलता प्राप्त की हो। युगप्रधान वही व्यक्ति हो सकता है, जिसमें धर्म, विज्ञान, अध्यात्म और राष्ट्रवाद का अपूर्व समन्वय हो, ऐसा व्यक्तित्व अपने कर्तृत्व से अहिंसक समाज संरचना का सूत्रधार हो। वर्तमान आचार्य महाश्रमण में उपर्युक्त सभी गुणों का समावेश हुआ है। अतः उन्हें युगप्रधान अलंकरण से विभूषित करना सर्वथा उपर्युक्त सामयिक एवं प्रासंगिक है।

युगप्रधान आचार्य महाश्रमण अनेक अनूठी विशेषताओं को संजोए हुए हैं। तेरापंथ धर्मसंघ के पहले आचार्य हैं, जिनकी दीक्षा किसी आचार्य द्वारा नहीं हुई। आपका दीक्षा लेने से पूर्व का नाम मोहन था। आपकी जन्मभूमि सरदारशहर में मुनिश्री सुमेरमल जी 'लाडनूं' द्वारा दीक्षा हुई। बाद में मोहन को मुनि मुदित के रूप में जाना जाने लगा। आचार्य तुलसी इनकी प्रतिभा के कायल थे और उन्होंने संत मुदित को 'महाश्रमण अलंकरण' प्रदान किया, बाद में आचार्य महाप्रज्ञ ने उन्हें युवाचार्य पद प्रदान करते हुए युवाचार्य महाश्रमण का ही संबोधन प्रदान किया।

सरदारशहर में ही आचार्य महाप्रज्ञ के देवलोकगमन के बाद युवाचार्य महाश्रमण स्वतः स्वाभाविक रूप से तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्य पद पर प्रतिष्ठित हो गए। इस तरह से आचार्य महाश्रमण को आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ की अनुपम कृति होने का भी गौरव प्राप्त होने के साथ-साथ इन दोनों आचार्यों की गौरवशाली विरासत भी प्राप्त हुई। आचार्य महाश्रमण बनने से पूर्व अपनी अटूट श्रद्धा व समर्पण से विभिन्न स्थितियों का सफर तय करके इस प्रतिष्ठित पद को प्राप्त किया है। मोहन से मुदित, मुदित से महाश्रमण, महाश्रमण से युवाचार्य महाश्रमण और युवाचार्य महाश्रमण से आचार्य महाश्रमण बनने तक की यह यात्रा केवल तेरापंथ धर्मसंघ की ही नहीं, अपितु जैन धर्म का एक गौरवशाली अध्याय है।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण आगमों, जैन दर्शन और तुलनात्मक धर्म के निष्णात और आधिकारिक विद्वान है। आपके नेतृत्व में वर्तमान में भी आगम संपादन का कार्यक्रम अनवरत चल रहा है। अपने दो महान गुरुओं-आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ के ग्रंथों का पारायण करके इनके वाङ्मय का भी संपादन कराया है।

जैन विश्व भारती मान्य संस्थान लाडनूं अर्थात् मान्य विश्वविद्यालय विश्व का पहला जैन विश्व विद्यालय है। यह संस्थान जैन विद्या तुलनात्मक धर्मों, प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान और अहिंसा प्रशिक्षण का विश्वव्यापी केंद्र बन गया है। आचार्य महाश्रमण इस विश्वविद्यालय के 'अनुशास्ता' के रूप में सर्वोच्च अधिकारी है। आपके नेतृत्व एवं निर्देशन में यह विश्वविद्यालय प्रगति के नए सोपान तय कर रहा है।

आचार्य महाश्रमण अनेक भाषाओं के ज्ञाता हैं। आप प्राकृत, संस्कृत, हिंदी पर अच्छा अधिकार रखते हैं। साथ ही आप तेरापंथ के पहले ऐसे आचार्य हैं, जिनका अंग्रेजी पर भी अच्छा अधिकार है। आचार्य महाश्रमण कुशल प्रवचनकार हैं। आप अपने प्रवचनों में आगम वाणी, भिक्षु दर्शन, तेरापंथ दर्शन और पूर्ववर्ती आचार्यों के विचार दर्शन के साथ-साथ सामयिक विषयों पर भी व्याख्यान देते हैं। आपका कंठ भी मधुर है और व्याख्यान के बीच गीतिकाएँ गाकर जनसाधारण को मंत्रमुग्ध कर देते हैं। आप ऐसे जैन आचार्य हैं, जिन्होंने साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा का लाडनूं में अमृत महोत्सव मनाया। बाद में बीदासर में पुनः 'शासनमाता' के अलंकरण से अलंकृत करके उन्हें असाधारण सम्मान प्रदान किया। जब वे दिल्ली में अस्वस्थ हुई तो एक दिन में ४७ किलोमीटर की पदयात्राएँ करके उन्हें दर्शन दिए, इसके बाद साध्वीप्रमुखा ने संथारा करके अपनी जीवन लीला को समाप्त किया। आप नारी सशक्तिकरण के पर्याय हैं। आपने दिल्ली के ऐतिहासिक लालकिले से अपनी अहिंसा यात्रा प्रारंभ की, जो २३ राज्यों से गुजरती हुई, जनसाधारण को नैतिकता, सद्भावना एवं नशामुक्ति का संदेश और संकल्प प्रदान करती हुई लोककल्याण की प्रेरक बनी। आचार्य महाश्रमण ने असम, मेघालय और नागालैंड जैसे उत्तरी-पूर्वी राज्यों की यात्रा करके एक नया कीर्तिमान स्थापित किया, इस यात्रा का आपने दिल्ली में ही समापन किया। आप पहले जैन आचार्य हैं जिन्होंने नेपाल के शहर विराटनगर में चातुर्मास किया। आपने भूटान जैसे राष्ट्र की भी पदयात्रा करके सबको चमत्कृत कर दिया। अपनी इस अहिंसा यात्रा में आपने विदेशी राष्ट्राध्यक्षों, उनके प्रतिनिधियों के साथ-साथ देश के मूर्धन्य राजनेताओं को भी आशीर्वाद व मार्गदर्शन प्रदान किया।

आप आधुनिक तकनीक को भी धर्म के प्रचार के लिए आवश्यक मानते हैं। आपकी प्रेरणा से ही ८ मई, २०२२ को सरदारशहर में आचार्य महाप्रज्ञ की समाधि स्थल पर अत्याधुनिक तकनीकी से लेस आचार्य महाप्रज्ञ म्यूजियम का लोकार्पण हुआ।

ऐसे अटल संकल्प शक्ति के धनी, अद्भुत संगठनकर्ता और अनुशासन के जीवंत-पर्याय, युगप्रधान आचार्य महाश्रमण को शत-शत वंदन है।

सूचना

उपासक श्रेणी

यह सूचित किया जाता है कि जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा के तत्त्वावधान में परमपूज्य गुरुदेव के पावन सान्निध्य में आगामी दिनांक 18 जुलाई से 16 जुलाई, 2002 तक छापर में नए उपासक बनने के इच्छुक भाई-बहनों के लिए उपासक प्रशिक्षण शिविर की समायोजना की गई है। प्रवेश परीक्षा का आयोजन 18 जुलाई को मध्याह्न में हो सकेगा।

उपरोक्त संदर्भ में अधिक जानकारी के लिए उपासक श्रेणी के राष्ट्रीय संयोजक सूर्यप्रकाश सामसुखा से उनके मोबाईल नंबर 9417944862 पर संपर्क किया जा सकता है।

विनोद बैद
महामंत्री

मनसुखलाल सेठिया
अध्यक्ष

जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा

महिला मंडल के विविध कार्यक्रम

वर्षीतप अनुमोदना

भीलवाड़ा।

तेरापंथ भवन, नागौरी गार्डन में तेरापंथ महिला मंडल द्वारा तपस्वियों की अनुमोदना और अभिनंदन कार्यक्रम का नवकार मंत्र उच्चारण से शुभारंभ हुआ। जैन धर्म के आदि प्रवर्तक भगवान ऋषभ की १२महीनों की कठिन साधना के बाद अंतराय कर्म क्षीण होने की राह से वर्षीतप की शुरुआत होती है। इस कार्यक्रम में भीलवाड़ा क्षेत्र से वर्षीतप करके अपनी आत्मा को शुभ भावों से उज्ज्वल बनाने वाली तपस्वी बहन–पुष्पा हिरण, सुशीला नौलखा को आमंत्रित किया गया।अभिनंदन एवं स्वागत किया गया।

तपस्वियों की अनुमोदना में संगीत प्रभारी पुष्पा पामेचा एवं मंडल टीम ने चौबीसी, गीतिका, ढाल, स्तवन आदि के माध्यम से तपस्वियों को मंगल रश्मियाँ प्रदान की। अणुव्रत समिति अध्यक्ष आनंद बाला टोडरवाल, अनिता हिरण ने भावों से तप अभ्यर्थना की।

मंगलाचरण महिला मंडल की बहनों ने गीतिका के माध्यम से किया। मीडिया प्रभारी नीलम लोढा ने बताया कि बहनों ने शॉल, माला, उर्पना द्वारा तपस्वियों का सम्मान किया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री रेणु चोरड़िया ने किया। कार्यक्रम में उपाध्यक्ष मैना कांठेड, सहमंत्री प्रेक्षा मेहता, कोषाध्यक्ष सुमन दुगड़, सह प्रचार-प्रसार मंत्री विनीता सुतरिया सहित कार्यसमिति, संरक्षक, परामर्शक मंडल की सभी सदस्याएँ उपस्थित रहीं।

रूपांतरण शिल्पशाला कार्यशाला

भुवनेश्वर।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में अभातेमम के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल ने उत्कल रॉय स्थित कनीका महाराजा के बंगले पर रूपांतरण शिल्पशाला कार्यक्रम का आयोजन किया। इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि आत्मा धर्म की साधना में ध्यान का वैसा ही मूल्य है जैसे की शरीर में मस्तक तथा वृक्ष के लिए उसकी जड़ का मूल्य है। ध्यान साधना की जीवन की सफलता का अमोघ उपाय है।

मुनिश्री ने आगे कहा कि अभाव पर ध्यान देना आर्तध्यान है जो जैसा नहीं है, वैसा जताना या बनावटी जीवन जीने की कोशिश करना क्रूर हिंसा का भाव रखना रौद्र ध्यान है। मुनिश्री ने प्रेक्षाध्यान के प्रयोग करवाए। मुनि कुणाल कुमार जी के मंगल गीत से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा मधु गीड़िया ने विचार रखे। तेमम ने प्रेक्षाध्यान गीत प्रस्तुत किया। आभार तेमम की मंत्री रश्मि बेताला व संचालन मुनि परमानंद जी ने किया।

शासनमाता निर्वाण दिवस पर श्रद्धांजलि

● **शासनश्री साध्वी मदनश्री** ●

हाथ जोड़कर मान मोड़कर, तिक्खुत्ते रे पाठ स्यूं, शासन माता ने म्हारी वंदना।
कलकत्ता में जनम्या थे, चंदेरी नै चमकाई,
तुलसी री आ अनुपम कृति, महिमा चिहुं दिशी है छाई,
किया पधार् या म्हाने छोड़ ने।
तीन-तीन आचार्यां री सेवा, किरपा रा थे पात्र बण्या,
गुरु इंगित आराध कर ही, आगे अपना चरण धर् या,
जीवन थे सफल बनायो जोर ने।
रजत जयंती मोच्छव रो, ओ मेलो देख्यो हर् यो भर् यो,
नव्य नजारो महाश्रमणी रो, देख म्हारो हियो ठर् यो,
के के बतावां बातां खोल ने।
म्हे नहीं सोच्यो दिली जा कर पाछा नहीं आवोला,
जन-जन की मनमोहक माता, सबने छोड़ जाओला,
पाछो उत्तर देणों पड़सी सोच ने।
स्वर्ग सुखां में रमण करो थे, शासन नै मत भूलज्यो,
अनंत सुखां नै पावण खातिर, कर्म कंटक ने तोइज्यो,
नहीं देखणी पड़सी दूजी ठौड़ ने।।

लय : तेजा---

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के महाप्रयाण दिवस के विविध कार्यक्रम

महान विचारक थे आचार्य महाप्रज्ञ

पारलू।

आचार्य महाप्रज्ञ का संपूर्ण जीवन मानवीय अर्हताओं की सुरक्षा के लिए समर्पित था। वे निश्चय और व्यवहार जगत के लिए प्रेरणा स्रोत थे। आचार्य महाप्रज्ञ ने अहिंसा, शांति, विश्व मैत्री के क्षेत्र में पहचान बनाई।

आचार्य महाप्रज्ञ ने आचार्य भिक्षु एवं आचार्य तुलसी के विचारों को युगीन शैली मे प्रस्तुत कर साहित्य जगत की महान सेवा की। उन्होंने जीवन के हर पहलू पर समसामयिक विचारों से समाधान दिया। जैन योग के क्षेत्र में उनका अप्रतिम अवदान प्रेक्षाध्यान था। ये विचार मुनि मोहजीत कुमार जी ने आचार्य महाप्रज्ञ के १३वें महाप्रयाण स्मृति दिवस पर कहे।

मुनिश्री ने महाप्रज्ञ के जीवन, दर्शन एवं कर्तृत्व के संदर्भ में अनेक प्रसंगों की प्रस्तुति देते हुए गीत का संगान किया। मुनि भव्य कुमार जी ने उनके अनुपमेय व्यक्तित्व को उनके रूपों में प्रकाश डालते हुए गीत से उन्हें श्रद्धांजलि समर्पित की।

मुनि जयेश कुमार जी ने आचार्य महाप्रज्ञ के द्वारा प्रदत्त अवदानों को आधुनिक शैली में प्रकट करते हुए गीत की पंक्तियों को मुखर कर उनके प्रति श्रद्धा का अर्घ्य चढ़ाया।

कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र एवं महाप्रज्ञ अष्टकम के पद्य से हुआ। इस अवसर पर रमेश बागरेचा, हर्ष बागरेचा ने श्रद्धासिक्त भावों से श्रद्धांजलि दी।

तेरांपथ महिला मंडल एवं कन्या मंडल ने सस्वर संगान किया। तृप्ति बागरेचा ने कार्यक्रम का संचालन किया। कार्यक्रम में आसपास के अनेक क्षेत्रों के श्रद्धालुजनों ने भाग लेकर मुक्त श्रद्धांजलि समर्पित की।

आचार्य महाप्रज्ञ महाप्रयाण दिवस

बैंगलुरु।

शासनश्री साध्वी कंचनप्रभाजी के सान्निध्य में आचार्य महाप्रज्ञ जी के १३वें महाप्रयाण दिवस का आयोजन किया गया। साध्वीश्री जी द्वारा नमस्कार महामंत्रोच्चार से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण किया। तेरापंथ सभा के उपाध्यक्ष महावीर धोका ने स्वागत वक्तव्य देते हुए आचार्य महाप्रज्ञ जी के प्रति आध्यात्मिक श्रद्धांजलि अर्पित की। आचार्यश्री के प्रति साध्वीवृंद द्वारा मंगलभावना प्रेषित की। साध्वी चेलनाश्रीजी ने महाप्रज्ञ को दिव्य पुरुष से संबोधित करते हुए कहा कि महाप्रज्ञ के साहित्य का एक लाइन भी कोई पढ़ लेगा वो समाधान की राह को प्राप्त कर लेगा।

साध्वी निर्भयप्रभाजी एवं साध्वी उदितप्रभाजी ने गुरुदेव महाप्रज्ञ जी के प्रति भावना प्रेषित की। तेयुप अध्यक्ष विनय बैद, अणुव्रत समिति अध्यक्ष शांतिलाल पोरवाल, महिला मंडल निवर्तमान अध्यक्ष शांति सकलेचा, मंत्री सरस्वती बाफना, अणुविभा राष्ट्रीय संगठन मंत्री कन्हैयालाल चिप्पड़ ने भी आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के प्रति भावनाएँ प्रेषित की।

शासनश्री साध्वी मंजुरेखाजी ने कहा कि मुनि नथमल जी से महाप्रज्ञ तक का सफर किन-किन विभूतियों में प्रफुल्लित हुआ। उनका जीवन सौम्य था। महाप्रज्ञजी ने जीवन-विज्ञान व प्रेक्षाध्यान का आभ्यासिक रूपांतर दिया। शासनश्री साध्वी कंचनप्रभाजी ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ अतींद्रिय ज्ञान संपन्न हैं। साध्वीवृंद ने गीत की प्रस्तुति दी। इस अवसर पर तेयुप द्वारा शांति सकलेचा का सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन तेयुप मंत्री प्रवीण बोहरा ने किया व सभी के प्रति आभार सज्जन राज पितलिया ने किया।

आचार्य महाप्रज्ञ का महाप्रयाण दिवस

साउथ-कोलकाता।

साध्वी स्वर्णरेखा जी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में साउथ कोलकाता मंडल की आयोजना में तेरापंथ के दशमाधिशास्ता आचार्यश्री महाप्रज्ञ का १३वाँ महाप्रयाण दिवस तेरापंथ भवन में मनाया गया।

साध्वीश्रीजी ने कहा कि परम पवित्र चेतना का नाम है–आचार्य महाप्रज्ञ। आचार्य तुलसी से संबोधन मिला–महाप्रज्ञ, दर्पण की अनुप्रेक्षा ने बनाया–आत्मज्ञ, तुलसी चरण में शुरू हुआ ज्ञान का महाप्रज्ञ, आगम सिंधु में डुबकियाँ लगाकर बन गए–आगमज्ञ।

साध्वीश्री जी ने कोलकाता की संघीय सभाओं के पदाधिकारी तथा महिला मंडल के पदाधिकारियों के साथ गीत का संगान करते हुए श्रद्धा अर्पित की। इस अवसर पर विकास परिषद के सदस्य बनेचंद मालू, साउथ सभा के उपाध्यक्ष कमल सेठिया, मंत्री खेमचंद रामपुरिया, साउथ-कोलकाता महिला मंडल की मंत्री बबिता भूतोड़िया ने अपने विचार रखे। साउथ-कोलकाता महिला मंडल की बारह गोष्ठियाँ सदर्न एवेन्यू, हाजरा, भवानीपुर, मौलाली सीआईटी, विवेक विहार, अलीपुर, न्यूअलीपुर, तारातल्ला, शिवतल्ला, पट्टोपुकुर, बालीगंज, गरचा ने भिन्न-भिन्न गीत का संगान किया।

कार्यक्रम का संचालन साउथ-कोलकाता महिला मंडल की सहमंत्री अनुपमा नाहटा ने किया।

समर्पण के महासुमेरु थे आचार्य महाप्रज्ञ

किलपॉक, चेन्नई।

साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञाजी के सान्निध्य एवं तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में आचार्यश्री महाप्रज्ञ की तेरहवीं वार्षिक पुण्यतिथि पर भावांजलि कार्यक्रम पुखराज बड़ोला के निवास स्थान पर मनाया गया। साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने आचार्यश्री महाप्रज्ञजी से जुड़े अनेक प्रेरक और श्रवणप्रिय घटना प्रसंगों का उल्लेख करते हुए कहा कि आचार्यश्री महाप्रज्ञ अनेक गुणों के महापुंज थे। जन-जन के आदर्श थे। वे ऐसे प्रज्ञापुरुष थे जिन्होंने दर्शन, ज्ञान, योग, आगम आदि के द्वारा युग को, नया बोध दिया, नई दिशा प्रदान की।

साध्वीश्री जी ने कहा कि उनके श्रीचरणों में आराधना, साधना और ज्ञानार्जन का मुझे वर्षों तक सौभाग्य मिला। स्नेहिल दृष्टि और विश्वास मिला। उनकी प्रेरणाएँ सदैव हमारा मार्ग प्रशस्त करती रहेंगी। कार्यक्रम का प्रारंभ साध्वीवृंद द्वारा 'महाप्रज्ञ अष्टकम' से हुआ। तेरापंथ सभा मंत्री गजेंद्र खांटेड़ ने श्रद्धासिक्त विचार व्यक्त किए।

महिला मंडल ने सामुहिक गीत का संगान किया। उपासक जयंतीलाल सुराणा एवं महिला मंडल अध्यक्षा पुष्पा हिरण ने भावांजलि अर्पित की। साध्वी डॉ० राजुलप्रभाजी ने अपनी स्वरचित काव्यांजलि में आचार्य महाप्रज्ञ जी की तुलना शिवशंकर से की। साध्वी डॉ० चैतन्यप्रभाजी ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ जी का व्यक्तित्व असीम था, उनका जीवन अध्यात्म और विज्ञान का समन्वय था। साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी द्वारा रचित गीतिका का संगान साध्वीवृंद ने किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी सिद्धियशा जी ने किया।

> ✦ *व्यक्तियों के समूह से समाज का निर्माण होता है, इसलिए समाज व्यक्ति से बड़ा होता है। एक व्यक्ति के चिंतन की तुलना में समाज अथवा संगठन का चिंतन महत्त्वपूर्ण होता है।*
>
> – आचार्यश्री महाश्रमण

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

नूतन गृह प्रवेश

पर्वत पाटिया।

रावलिया कला निवासी, पर्वत पाटिया प्रवासी भवरलाल परमार के नूतन गृह प्रवेश का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से किया गया। संस्कारक रवि मालू एवं हिम्मत बम्ब ने संपूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से सानंद संपन्न करवाया।

परिवारजनों ने संस्कारकों का आभार ज्ञापन किया। इस कार्यक्रम में तेयुप के कार्यकारिणी सदस्य पवन बुच्चा ने सभी का आभार व्यक्त किया परिषद की तरफ से मंगलभावना यंत्र भेंट किया गया।

नामकरण संस्कार

साउथ हावड़ा।

गंगाशहर निवासी, साउथ हावड़ा प्रवासी राजेंद्र-अंजु सेठिया के सुपुत्र वरुण-कीर्ति सेठिया की संपुत्री के नामकरण का कार्यक्रम जैन संस्कार विधि से संस्कारक पवन कुमार बैंगाणी ने सहयोगी संस्कारक ऋषभ दुधोड़िया, सुनीता नाहटा के साथ मिलकर जैन मंत्रोच्चार के द्वारा संपादित किया।

राजेंद्र सेठिया एवं नवीन सेठिया ने अपने विचार व्यक्त करते हुए संस्कारकों का आभार व्यक्त किया।

नूतन कॉम्प्लेक्स उद्घाटन

इचलकरंजी।

असाडा निवासी, इचलकरंजी प्रवासी मनोज कुमार, भविष्यकुमार संघवी के नूतन कॉम्प्लेक्स का शुभारंभ जैन संस्कार विधि द्वारा अभातेयुप संस्कारक विकास सुराना और पंकज जोगड़ ने विधि-विधानपूर्वक मंत्रोच्चार के साथ करवाया।

इस अवसर पर तेरापंथ सभा, तेयुप, महिला मंडल परिवार की सदस्यों की उपस्थिति रही। तेयुप अध्यक्ष मुकेश ने मनोज को बधाई प्रेषित की।

नूतन गृह प्रवेश

नालासोपारा।

जुगराज रूपलाल धाकड़ निवासी शिशोदा (नालासोपारा) का गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से हुआ। संस्कारक पारस बाफना ने विधिवत मंत्रोच्चार द्वारा नूतन गृह प्रवेश करवाया।

सभा मंत्री लक्ष्मीलाल मेहता, महिला मंडल से लक्ष्मी देवी मेहता, ज्योति हिरण, तेयुप अध्यक्ष किशन कोठारी, तेयुप निवर्तमान मंत्री जितेंद्र हिरण आदि ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

नामकरण संस्कार

पर्वत पाटिया।

गंगाशहर निवासी, पर्वत पाटिया प्रवासी अखेचंद बच्छावत के सुपुत्र हनुमान-ज्योति बच्छावत के प्रांगण में कन्या का जन्म हुआ, जिसका नामकरण संस्कार जैन विधि से संस्कारक धर्मचंद सामसुखा, मनीष कुमार मालू एवं सहयोगी के रूप में पवन बुच्चा, श्रेयांस बुच्चा ने संपूर्ण विधि द्वारा संपन्न करवाया।

तेयुप अध्यक्ष चंद्रप्रकाश परमार ने बच्छावत परिवार एवं संस्कारकों के प्रति आभार ज्ञापित किया तथा नामकरण पत्रक व मंगलभावना पत्रक भेंट किया।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

रायपुर।

संतोष दुगड़ व मनोज बोथरा के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक अनिल दुगड़ व सूर्यप्रकाश बैद द्वारा संपूर्ण विधि एवं मंत्रोच्चार द्वारा संपादित करवाया।

तेयुप अध्यक्ष वीरेंद्र डागा ने दुगड़ व बोथरा परिवार एवं उपस्थित जनों व संस्कारक का आभार व्यक्त किया। संस्कार विमधा में सुमित जैन, गौरव दुगड़, निर्मल बैंगानी, महेश गोलछा, मनीष सिंघी, मनीष दुगड़ की उपस्थिति रही।

✦ अज्ञानी व्यक्ति का अधिकांश समय कलह, निंदा, विकथा आदि में व्यतीत हो सकता है। ज्ञानी व्यक्ति को जागरूकतापूर्वक दुर्लभ मानव जीवन के सदुपयोग का प्रयास करना चाहिए।
—आचार्यश्री महाश्रमण

भगवान महावीर जयंती के विविध आयोजन

महावीर जन्म कल्याणक दिवस का आयोजन

राशमी।

शासनश्री मुनि रविंद्र कुमार जी व मुनि अतुल कुमार जी एवं स्थानकवासी परंपरा से साध्वी सुभाषजी व साध्वी आकांक्षाजी के सान्निध्य में भगवान महावीर जन्म कल्याणक दिवस मनाया गया। मंगल प्रभात की बेला में जैन मंदिर से बैंड बाजों की मधुर धुनों के साथ जन्म जयंती के उपलक्ष्य में विशाल रैली का आयोजन किया गया।

मुनि रविंद्र कुमार जी ने कहा कि दुनिया को जीतने से कुछ नहीं होता, स्वयं को जीतो। दुनिया जीतकर तो सिकंदर भी खाली हाथ गया। भगवान महावीर ने स्वयं को जीता। मुनि अतुल कुमार जी ने कहा कि भगवान महावीर हमारे आदर्श हैं। उनके संदेश आज भी प्रासंगिक हैं।

साध्वी आकांक्षाजी ने मधुर गीतिका का संगान किया। निर्मल खाब्या, संगीता बाफना, संपत खाब्या, राजेंद्र ओस्तवाल, स्वाध्यायी भेरूलाल पोखरना, अभिनव गादिया, पहुनां कन्या मंडल, राशमी कन्या मंडल ने मनमोहक प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम में भीलवाड़ा, पुर, उदयपुर, भीमगढ़, मुरोली, पहुनां, लसाड़िया, गंगापुर से अनेक श्रावक सम्मिलित हुए। मुख्य अतिथि एम०एल०ए० अर्जुनलाल जिंगर की उपस्थिति रही।

मंगलाचरण तेममं ने किया। तेरापंथी सभा मंत्री मंगलचंद बाफना ने आभार व्यक्त किया। मंच का संचालन मुनि अतुल कुमार जी ने किया। समारोह में तेरापंथ, स्थानकवासी संप्रदाय के लोग बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

अनेकांत के उद्‌गाता थे - भगवान महावीर

कांदिवली।

शासनश्री साध्वी जिनरेखाजी एवं साध्वी राकेश कुमारी जी के सान्निध्य में भगवान महावीर का जन्मोत्सव मनाया गया। जिसकी मंगल शुरुआत साध्वीश्री जी के मंगल मंत्रोच्चार से हुई। साध्वी राकेश कुमारी जी ने कहा कि कुंडलपुर की उस दिव्य धरा पर महाराज सिद्धार्थ महारानी त्रिशला की कुक्षी से एक ऐसे प्रकाश पुंज का अवतरण हुआ जो जन-जन के तारणहार बन गए। भगवान महावीर अहिंसा, समता के पुजारी थे।

शासनश्री साध्वी जिनरेखाजी ने कहा कि भगवान महावीर जैन परंपरा के २४वें तीर्थंकर थे। भगवान महावीर के पास दो हथियार थे। तपस्या और ज्ञान। फिर भी वह विचलित नहीं हुए। साध्वी श्वेतप्रभाजी, साध्वी मधुरयशाजी, साध्वी विपुलयशाजी ने अपने वक्तव्य और कविता के माध्यम से भगवान महावीर के कर्तृत्व व व्यक्तित्व पर अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। कांदिवली संयोजिका नीतू ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। साध्वीवृंद की सामुहिक गीत की प्रस्तुति हुई। मालाड ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा गीत की प्रस्तुति हुई। भारती सेठिया ने गीत प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम में महिला मंडल अध्यक्षा, प्रेक्षाप्राध्यापक पारस दुगड़, उपासिका विमला दुगड़, लीला देवी सालेचा, मनीष रांका, मालाड के गौतम मूथा ने भावों की अभिव्यक्ति दी।

मालाड और कांदिवली के तेयुप ने गीत की प्रस्तुति दी। तुलसी फाउंडेशन के अध्यक्ष के०एल० परमार ने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन छत्र कुमार खटेड़ ने किया। मालाड के मंत्री ने आभार ज्ञापन किया।

भगवान महावीर जन्म कल्याणक दिवस

भुवनेश्वर।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में स्थानीय तेरापंथ भवन में सकल जैन समाज के द्वारा आयोजित किया गया। इस अवसर पर नवापाड़ा के विधायक राजेंद्र ढोलकिया, तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष मनसुख सेठिया आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि भारतीय संस्कृति के अनमोल रत्न थे—भगवान महावीर। वे ऋषि परंपरा के उज्ज्वल नक्षत्र थे। वे ज्योतिर्धर, महामहिम, महाशक्ति के महास्रोत थे।

मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि राजेंद्र ढोलकिया ने महावीर जयंती की शुभकामना देते हुए कहा कि भगवान महावीर के आदर्शों को याद करें और जीवन में अपनाने का प्रयास करें। महासभा के अध्यक्ष मनसुख सेठिया ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि भगवान महावीर की समता अखंडित थी। वे कष्टों में भी विचलित नहीं हुए।

इस अवसर पर प्रकाश बेताला, तेरापंथी सभा के अध्यक्ष बच्छराज बेताला, तेयुप के अध्यक्ष विवेक बेताला, तेममं की अध्यक्षा मधु गीड़िया, तेरापंथ भवन समिति के अध्यक्ष सुभाष भूरा ने अपने विचार व्यक्त किए। ज्ञानशाला के बच्चों व प्रशिक्षिकाओं ने भगवान महावीर के उपसर्गों पर नाटिका प्रस्तुत की। कार्यक्रम का शुभारंभ तेमम की युवतियों ने महावीर अष्टकम से किया। तेरापंथ कन्या मंडल व तेयुप के सदस्यों ने गीतों का संगान किया। आभार ज्ञापन तेरापंथ सभा के मंत्री पारस सुराणा ने व संचालन मुनि परमानंद ने किया। अतिथियों का सम्मान किया गया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में श्रद्धालुगण उपस्थित थे।

भगवान महावीर जन्म कल्याणक दिवस

नालासोपारा (मुंबई)।

भगवान महावीर स्वामी के जन्म कल्याणक महोत्सव निमित्त सकल जैन संघ के साथ वर घोड़ा रथ यात्रा रखी। जिसमें मनोज स्व० हस्तीमल सोलंकी, मिश्रीमल चोरड़िया, धर्मेश हीरालाल कच्छारा, उत्तमचंद चोरड़िया परिवार का विशेष सहयोग रहा। उसके बाद महेश पार्क में विराजमान साध्वीश्री द्वारा प्रभु महावीर की वाणी का सकल जैन संघ ने श्रवण किया।

शाम को एक शाम प्रभु महावीर के नाम एवं भक्ति का आयोजन किया गया। नमस्कार महामंत्र द्वारा कार्यक्रम की शुरुआत हुई। जिसमें विरार भिक्षु भक्ति मंडल से प्रसिद्ध गायक तेजराज हिरण ने भक्ति का समा बांधा। स्थानीय गायक मनोज बोहरा, नरेश मांडोत आदि ने प्रस्तुति दी।

महिला मंडल, कन्या मंडल द्वारा भी प्रस्तुति दी गई। सभा अध्यक्ष मदन कोठारी द्वारा स्वागत भाषण एवं आभार ज्ञापन किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में सभा संरक्षक मिश्रीमल चोरड़िया, सभा मंत्री लक्ष्मीलाल मेहता, कोषाध्यक्ष नरेंद्र सोलंकी, बाबूलाल सिंघवी, अभातेयुप परिवार से जैन संस्कारक पारस बाफना, जेटीएन से विकास धाकड़, तेयुप अध्यक्ष किशन कोठारी, मंत्री दिनेश धाकड़ आदि अनेक पदाधिकारीगण एवं गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

भगवान महावीर जन्म कल्याणक पर नेत्र जाँच शिविर

ट्रिप्लीकेन, चेन्नई।

भगवान महावीर जन्म कल्याणक पर श्री जैन संघ, ट्रिप्लीकेन द्वारा अहिंसा रैली, सामुहिक व्याख्यानमाला एवं नेत्र जाँच शिविर का आयोजन मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत महावीर जैन भवन पिल्लयार कोइल स्ट्रीट से विशाल अहिंसा रैली के रूप में हुई। रैली वहाँ से रॉयपेट्टा पुराना मंदिर होते हुए ट्रिप्लीकेन जैन मंदिर होकर तेरापंथ भवन पहुँची।

मदनलाल मरलेचा ने मंगलाचरण से कार्यक्रम शुरू किया। ललित छाजेड़ ने जैन संघ की ओर से सभी का स्वागत किया। ललित राठौड़ ने संयोजन एवं सुरेश संचेती के धन्यवाद ज्ञापन के पश्चात कार्यक्रम संपन्न हुआ।

भगवान महावीर जन्म कल्याणक दिवस

सायन-कोलीवाड़ा, मुंबई।

तेयुप द्वारा भगवान महावीर जन्म कल्याणक दिवस के अवसर पर ज्योतिर्मयी स्तूप बनकर जन-जन को आलोक का दान दिया है। समणी निर्वाणप्रज्ञा जी एवं समणी मध्यस्थप्रज्ञाजी के सान्निध्य में महावीर जयंती का कार्यक्रम हुआ। सर्वप्रथम तेयुप, महिला मंडल, किशोर मंडल, कन्या मंडल, ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा प्रभातफेरी का आयोजन हुआ।

कार्यक्रम के द्वितीय चरण की शुरुआत समणी निर्वाणप्रज्ञाजी के नमस्कार महामंत्र द्वारा हुई। मंगलाचरण महिला मंडल की वरिष्ठ बहनों द्वारा किया गया। पधारे हुए सभी सदस्यों का स्वागत संयोजिका तरुणा कोठारी ने किया।

उपासक कविराज प्रकाश धाकड़ ने महावीर जयंती के उपलक्ष्य में काव्यात्मक प्रस्तुति दी। समणी मध्यस्थप्रज्ञा जी ने पीपीटी के माध्यम से प्रश्न-उत्तर किए और उनसे संबंधित भगवान महावीर के उपसर्ग का रोचक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। महिला मंडल द्वारा प्रस्तुति दी।

ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा भगवान महावीर पर गीतिका का संगान किया गया। तेयुप से सागर सामर ने गीतिका की प्रस्तुति दी। समणी निर्वाणप्रज्ञा जी ने उद्‌बोधन दिया। कार्यक्रम का संचालन समणी मध्यस्थप्रज्ञा जी ने किया। सायन कोलीवाड़ा, तेयुप अध्यक्ष सुनील कोठारी ने सभी का आभार ज्ञापन किया एवं समणीवर के प्रति मंगलभावना व्यक्त की।

अभातेयुप परिवार से अविनाश इटोडिया, एमबीडीडी पूर्व मुंबई संयोजक राजेश कोठारी, मुंबई सभा उपाध्यक्ष नवरत्न गन्ना, पूर्व अध्यक्ष भरत मेहता, कन्हैयालाल मेहता, गणपत सोनी, तेयुप के अध्यक्ष सुनील कोठारी, मंत्री शैलेश दुगड़, महिला मंडल से मधु मेहता, विशेष सहयोगी संगीता कोठारी, संयोजिका तरुणा कोठारी, सह-संयोजिका नीलम परमार तथा ज्ञानशाला संयोजिका शिल्पा मेहता कच्छारा, कन्या मंडल संयोजिका मनीषा आदि सभी पदाधिकारियों की उपस्थिति रही।

भगवान महावीर जन्म कल्याणक दिवस

पूर्वांचल-कोलकाता।

भगवान महावीर का जन्म कल्याणक दिवस एवं महामना भिक्षु स्वामी की तेरस की स्तुति में तेयुप द्वारा अपनी भजन मंडली पूर्वांचल स्वर लहरी के साथ धम्म जागरण का आयोजन कार्यकारिणी समिति सदस्य राकेश चोरड़िया के नूतन निवास स्थान पर किया।

कार्यक्रम की शुरुआत पूर्वांचल स्वर लहरी के गायकों द्वारा मंगलाचरण एवं महावीर स्तुति से हुई। तेयुप के गायक राजीव खटेड़, मनोज चंडालिया, दीपक पुगलिया, मुदित पुगलिया, धीरज मालू तथा किशोर मंडल से हर्षित-अर्पित मालू ने भगवान महावीर एवं महामना भिक्षु की आराधना में स्वर वर्षा कर श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

कार्यक्रम में निवर्तमान अध्यक्ष आलोक बरमेचा, तेयुप के अध्यक्ष विकास सिंघी, कार्यसमिति सदस्य राजेश चोरड़िया, मुकेश बरमेचा आदि उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का संचालन तेयुप के सहमंत्री एवं स्वर लहरी के प्रभारी राजीव खटेड़ ने किया।

दीक्षा दिवस कार्यक्रम का आयोजन

रायसिंहनगर।

आचार्यश्री महाश्रमण जी के ४९वें दीक्षा दिवस पर तेयुप, रायसिंहनगर द्वारा अभातेयुप के निर्देशन में 'महाश्रमणोस्तु मंगलम्' के अंतर्गत १५ मई, २०२२ की संध्या को भक्ति संध्या का आयोजन स्थानीय तेरापंथ भवन में किया गया।

सभा अध्यक्ष, तेयुप अध्यक्ष सहित स्थानीय श्रावकों द्वारा कार्यक्रम में भाग लिया गया। ज्ञातव्य है कि स्थानीय स्तर से निबंध कार्यक्रम में भी श्रावकों द्वारा लेख भेजे गए है। तेयुप अध्यक्ष डॉ० मुकेश जैन द्वारा उपस्थित श्रावकों को नवनियुक्त साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा जी के बारे में संक्षिप्त परिचय दिया गया और वंदना अर्पण की गई।

आचार्यश्री महाश्रमण जी के युगप्रधान, जन्म दिवस के उपलक्ष्य में

संघ में खुशियाँ अपरंपार

● शासनश्री साध्वी रतनश्री ●

संघ में खुशियाँ अपरंपार।
युगप्रधान अभिवादन का दिन लाया नई बहार।।

मुनि सुमेर से दीक्षा लेकर
तुलसी गुरु से स्नेह प्राप्त कर
महाप्रज्ञ से शिक्षण पाकर
बढ़ते रहे तीव्र गति से तुम विद्या में हरबार।।

प्रज्ञावान बने अतिभारी
तेरापथ की खिल रही क्यारी
शासन में है महिमा न्यारी
निर्मल प्रतिभा देख तुम्हारी विस्मित है संसार।।

युगों-युगों तक अमर रहो तुम
जगती का संताप हरो तुम
दिनकर बनकर खूब तपो तुम
कोटि दिवाली राज करो तुम पग-पग जय-जयकार।।

भैक्षव गण में अभिनव पुलकन
नभ से अमृत का अभिवर्षण
हर्षित है धरती का कण-कण
दीक्षा महोत्सव आज मनाएँ ओ शासन शृंगार।।

लय : जगाया तुमको कितनी बार---

आचार्य महाश्रमणजी के जन्म दिवस पर

● साध्वी गौतमप्रभा ●

जन्म दिवस की बेला आई।
युगप्रधान की ले लो बधाई।।
मंगल घड़ियाँ आई हो।---गुरु महाश्रमणजी
जय हो जय हो, जय हो।---गुरु महाश्रमणजी

माँ नेमा के लाल दुलारे
झूमरमल के कुल उजियारे
घर-आँगन खुशियाँ छाई हो।---गुरु----

मोहन से मुदित की यात्रा
मुदित से महारमण की यात्रा
संयम यात्रा सुखदाई हो।---गुरु---
अहिंसा यात्रा सुखदाई हो।---

अवदानों की अकथ कहानी
श्रमनिष्ठा की अमिट निशानी
पंचाचार बने वरदाई हो।---

लाखों के तुम नयन सितारे
कितनों के हैं भाग्य संवारे
जन-जन के तारण हारे हो---

युग-युग जीओ शासन नायक
तेरापंथ के हो गणनायक
तुलसी कृति मनभाई हो।---गुरु---
महाप्रज्ञ छवि दिखपाई हो।---गुरु---

लय : गंगा मानो चल घर---

षष्टीपूर्ति एवं युगप्रधान अभिषेकोत्सव के अवसर पर

● साध्वी संघप्रभा ●

मंगल-भावार्पण
शत-शत-वर्धापना।

ओ युगाधार! युग पथ दर्शक! युग की आस्था के अमर धाम।
ओ युगप्रधान! युग संपोषक! लो कोटि कोटि युग का प्रणाम।।

जब-जब होता है मानवीय मूल्यों का क्षरण और नैतिकता रूपी द्रौपदी का स्वार्थ रूपी दुर्योधन करता है चीर हरण। तब-तब इस धरती पर होता है किसी-न-किसी महामानव का अवतरण। बनता है उन्हीं में से कोई तुलसी, कोई महाप्रज्ञ तो कोई महाश्रमण। तभी तो सार्थक होता है उनके लिए युगप्रधान जैसा गरिमामय अलंकरण। जिनके बदलते आयामों के साथ बदलता है जीवन-मूल्यों का संस्करण। होता है चिंतन का परिष्करण। अथवा एक नए युग की दिशा में अभिनिष्क्रमण। तन भले हो मानव का पर मन का हो गया अध्यात्म के उच्च शिखर पर उत्क्रमण। करुणा के उसी कल्पवृक्ष का एक देदीप्यमान नाम है—आचार्य महाश्रमण। जिसमें युगीन समस्याओं का समाधान देने व युगीन आयामों से युगधारा बदलने की क्षमता होती है। वही धर्मनेता बन सकता है, युगप्रणेता, युगवेत्ता और सच्चा युग प्रचेता।

हे युगधारा के संवाहक!

आपश्री ने न केवल अहिंसा यात्रा द्वारा हजारों कि०मी० पाँव-पाँव चलकर भूमितल की दूरियों को नापा है, अपितु मानव मन के गलियारों में व्याप्त बुराइयों के तमस को दूर कर नैतिकता, सद्भावना तथा नशामुक्ति के संदेशों से जिस तरह युग चेतना को आलोकित किया है, वस्तुतः लोक-कल्याण के लिए ऐसा श्रम करने वाले विरल महापुरुषों से ही यह सृष्टि समलंकृत होती है। हे युग चिंतक! युगप्रवर्तक! युगद्रष्टा! युगस्रष्टा!

आप जैसे प्रखर प्रतापी, विश्वव्यापी, महिमातिशायी, पुण्यश्लोक प्रभास्वर आभामंडल, विलक्षण प्रतिभा, बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी युगांतकारी महानायक का ऊर्जस्वल नेतृत्व पाकर भैक्षव शासन, जिनशासन ही नहीं संपूर्ण भारतीय अध्यात्म संस्कृति गौरवान्वित हुई है।

हे ऋजुता के रक्ताम रवि! मृदुता के मानसरोवर।

आपश्री ने युगप्रधान आचार्यश्री तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञ की प्रज्ञा को न केवल आत्मसात किया है उस बोधामृत को जन-जन तक बाँटकर मानवता के भाग्याकाश में सृजन के नए क्षितिज उद्‌घाटित किए हैं। नैतिक क्रांति के पुरोधा! चट्टानी संकल्प एवं अदम्य साहस से भरी तुम्हारे पुरुषार्थ की यह यशोगाथा समय के भाल पर जागृति की जीवंत प्रेरणा बनकर असंख्य काल तक स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगी। ३० जनवरी तदनुसार माघ शुक्ला त्रयोदशी को महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अपने अमृत महोत्सव की भव्य आयोजन बेला में आपश्री के उसी उज्ज्वल कर्तृत्व के मूल्यांकन हेतु चतुर्विध धर्मसंघ की भावना का सशक्त प्रतिनिधित्व करते हुए आचार्यश्री महाश्रमण जी को युगप्रधान आचार्यों की तेजस्वी परंपरा में विन्यस्त कर जो महान कार्य किया है दुनिया सदियों तक उस पर नाज करेगी। काश! आज उनकी महनीय उपस्थिति में यह विराट गरिमामय कार्यक्रम मनाया जाता तो इस नजारे का रंग कुछ ओर ही होता। खैर! अब दिव्यलोक से ही उस दिव्यात्मा शासनमाता की दिव्याशीषें धर्मपुत्र आचार्य को वर्धापित कर रही है। प्रभो! संप्रति हमारा मन पाखी क्षेत्रीय दूरियों को अतिक्रांत कर श्री सन्निधि की निकटता का अनुभव करता हुआ युगप्रधान अभिषेकोत्सव एवं षष्टीपूर्ति समारोह की मंगल बेला में शत-शत श्रद्धासिक्त वंदना के साथ अपने आराध्य परमपूज्य आचार्यप्रवर को ढेरों बधाइयाँ समर्पित कर रहा है। आप शतायु हों, दीर्घायु हों इसी मंगलभावना के साथ—

तुम्हारी कीर्ति की गाथा, प्रभो युग कल्प गाएँगे।
करोड़ों कर्म के उत्सव, मगन मन हम मनाएँगे।।

आभा तेरी है आकर्षक

● साध्वी रौनकप्रभा ●

तुम शक्तिधाम हो, तुम तीर्थधाम हो, हर दिल के राम हो, गुरुवर मेरे
अखिलेश्वर हो, ज्ञानेश्वर हो, प्रणेश्वर हो, गुरुवर मेरे
हे युगप्रधान, हे शासनस्वामी, स्वीकारो तुम अभिनंदन।
जय ज्योतिचरण, जय महाश्रमण

अनुशासन के प्रबल पुजारी, महायशस्वी महाधृतिधारी
अतिशयधारी आत्मविहारी
समतायोगी, दृढ़आचारी, जन-जन के हो तुम उपकारी
हृदयग्राही तेरी वाणी
उत्तमक्षांति ऋजुता तेरी, हे करुणाकर मृदुता तेरी
आभा है तेरी आकर्षक
महावीर हो अवतारी, तेरी समता का करें वरण
जय ज्योतिचरण, जय महाश्रमण

शरच्चन्द्र सा मुखमंडल है, आभामंडल अति उज्ज्वल है
मूरत लागे तेरी मोहनी
मेरु सा अति उन्नत चिंतन, शास्त्र समंदर का कर मंथन
ज्ञान की ज्योत जलाई
तपते लोगों का ताप हरा, आबाल वृद्ध में मोद भरा
श्रेयस्कर तेरा स्पंदन
संकटमोचक है विघ्नविनाशक, पाप ताप का करो हरण
जय ज्योतिचरण, जय महाश्रमण

तुलसी ने नजरों से निखरा, महाप्रज्ञ ने देखी प्रज्ञा
संघ को हिमालय पे चढ़ाया
दीर्घ साधना से बन पाए, युगप्रधान तुम सफल प्रणेता
सौ-सौ बार बधाएँ
महाप्रयाण अक्षय तृतीया, पट्टोत्सव दीक्षा जन्मोत्सव
छः-छः से सार्थक षष्टिपूर्ति
पर उपकार परायण गुरु के पाकर धन्य हुआ क्षण-क्षण
जय ज्योतिचरण, जय महाश्रमण

शपथ ग्रहण समारोह

बंगोमुंडा।

मुनि प्रशांत कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में ओड़ीसा प्रांतीय तेरापंथी सभा वर्ष-२०२२-२४ के नव मनोनीत अध्यक्ष मुकेश कुमार जैन ने अपने पदाधिकारियों के साथ शपथ ग्रहण किया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुनि प्रशांत कुमार जी के नमस्कार महामंत्र द्वारा किया गया। मंगलाचरण बंगोमुंडा महिला मंडल से उज्ज्वल देवी जैन ने किया। सभा के अध्यक्ष जयप्रकाश जैन ने सभी का स्वागत किया। मुकेश जैन ने विगत वर्षों में प्रांतीय सभा द्वारा की गई गतिविधियों के बारे में अवगत कराया। महासभा के कार्यसमिति सदस्य केशव नारायण जैन एवं टिटिलागढ़ नगरपालिका अध्यक्ष ममता जैन ने अपने विचार प्रस्तुत किए।

मुनि कुमुद कुमार जी ने प्रांतीय सभा के कार्यों को सराहा एवं ज्ञानशाला के सुचारु रूप से चलाने हेतु जोर दिया। ओड़ीसा प्रांतीय सभा के वरिष्ठ सलाहकार एवं चुनाव अधिकारी तुलसीराम जैन ने चुनाव प्रणाली संबंधित जानकारी देते हुए नव मनोनीत अध्यक्ष को नियुक्ति पत्र भेंट किए एवं शपथ पाठ करवाए। टिटिलागढ़ नगरपालिका अध्यक्ष ममता देवी जैन, बंगोमुंडा ब्लॉक वाइस चेयरमैन केशव नारायण जैन, वार्ड मेंबर कृष्णा देवी जैन को साहित्य भेंट किया गया। मुनि प्रशांत कुमार जी ने अपने उद्‌बोधन में प्रांतीय सभा के कार्यों की सराहना की। सभा के अशोक जैन एवं ज्ञानशाला प्रभारी बिरेंद्र जैन ने अपने विचार व्यक्त किए। प्रांतीय सभा उपाध्यक्ष मनोज कुमार जैन ने आभार ज्ञापन किया। मंच संचालन प्रांतीय सभा के महामंत्री अनूप कुमार जैन ने किया।

✦ इस दुनिया में कोई स्थायी नहीं, सब राही हैं।
—आचार्यश्री महाश्रमण

शासनश्री साध्वी गुणमाला जी के देवलोकगमन के उपलक्ष्य में

यात्रा - गुलाब से गुणमाला

❒ साध्वी लक्ष्यप्रभा ❒

शक्ति और भक्ति-शौर्य और वीरता के रंग से रंगी उदयपुर की माटी में जन्म लेने वाली बालिका गुलाब का बचपन तलेसरा परिवार में बीता। तलेसरा परिवार मंदिरमार्गी में अग्रणी था। माँ पेफांबाई पीहर से तेरापंथी थी। नियति के योग से बालिका गुलाब तेरापंथ के प्रति आकर्षित हो गई। धीरे-धीरे वैराग्य की भावना जगी। मंदिरमार्गी परिवार की बेटी तेरापंथ में दीक्षा लेना चाहे तो विरोध होना स्वाभाविक था, पर गुलाब काँटों के बीच खिलना जानती थी। हर विरोध को मंजिल का पायदान बनाकर चलती रही। पारमार्थिक शिक्षण संस्था में शिक्षण-प्रशिक्षण प्राप्त कर वि०सं० २०१५ को गुरुदेव श्री तुलसी के मुखार्विंद से दीक्षा का आदेश लेकर घर गई। पूरा परिवार उत्साह के साथ वैरागण गुलाब की दीक्षा की तैयारी में जुट गया। उदयपुर से कानपुर रवाना होने से स्थानीय तेरापंथ समाज की ओर से बंदोली निकलनी थी। उस समय इतर तेरापंथी कुछ लोगों ने विरोध की मानसिकता से जुलूस के रास्ते में काँच के टुकड़े बिछा दिए। स्थानीय सभा बिना प्रतिक्रिया काँच के टुकड़ों को हटाकर सानंद जुलूस निकाला। आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा के दिन आचार्य तुलसी के करकमलों से दीक्षित होकर मुमुक्षु गुलाब साध्वी गुणमाला बन गई। उस समय उनके संसारपक्षीय पिताजी (पूनमचंद तलेसरा) ने गुरुदेव को निवेदन किया—हम मंदिरमार्गी परिवार से हैं। गुलाब की इच्छा के कारण आपके चरणों में सौंप दिया। आप इसका पूरा ध्यान रखना। गुरुदेव ने उन्हें बहुत आश्वस्त किया।

साध्वी गुणमाला का साध्वी जीवन का बचपन शासन गौरव साध्वी किस्तूरांजी के सान्निध्य में बीता। लगभग ३५ वर्षों तक उनके संरक्षण में साधना-अध्ययन प्रशिक्षण पाया। सुदूर प्रदेशों की लंबी यात्राएँ की। पूरी कर्मठता के साथ शासन गौरव साध्वी किस्तूरांजी की सहवर्ती बनकर काम करती रही। वे स्वयं कई बार बताती थीं कि मेरे आगेवान की प्रेरणा से मैंने सैकड़ों गीतिकाएँ, सैकड़ों संस्कृत श्लोक, कई नाटक-व्याख्यान-मुक्तक आदि की रचना की। गुरुदेव की कृपा एवं उनकी प्रेरणा से ही मैं कुछ सीख पाई हूँ। शारीरिक श्रम भी बड़े चाव से किया करती थी। तपस्या का अच्छा क्षयोपशम था। दो मासखमण, १५ तक की लड़ी, प्रतिवर्ष दो तेला-महीने में चार उपवास-एकासन, आयंबिल आदि अनेक छोटी-बड़ी तपस्याएँ की।

२००१ तारानगर मर्यादा महोत्सव पर आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने उन्हें अग्रगण्य बना दिया। उसके बाद आपकी महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, मारवाड़, मेवाड़, थली आदि क्षेत्रों की यात्राएँ की। आपकी व्यवहारकुशलता जन-संपर्क एवं सार-संभाल के कार्य को मधुर बना देती। आपकी वक्तव्य शैली जनसमूह को बाँधे रखती। सैकड़ों लोगों को गुरुधारणा एवं १२ व्रत स्वीकार करवाए। २२ वर्ष तक अग्रगण्य पद के दायित्व को कुशलता के साथ निभाती रही। सहवर्ती साध्वियों में भी संघनिष्ठा, गुरुनिष्ठा के संस्कार भरती रही।

अंतिम वर्षों में अनेक बीमारियों ने उन्हें घेर लिया। स्वयं बहुत सचेत थी। पथ्य-परहेज दवाई लेने आदि कार्यों के लिए दूसरों पर निर्भर नहीं थी। कभी साध्वियों द्वारा मनुहार होने पर कहती—खाकर वेदना को बढ़ाने की अपेक्षा तो नहीं खाना ज्यादा अच्छा है। लगभग महीने में २५ दिन ५ विगय का वर्जन करती। अंतिम दिनों दवाइयाँ एवं बीमारी की वजह से भयंकर प्यास का परिषह रहा। डॉक्टर के परामर्शानुसार एक लीटर से ज्यादा पानी नहीं पीना था। गर्मी का मौसम। जीभ सूखकर लकड़ी के टुकड़े की तरह रुखी हो जाती। जब रात को प्यास सताती तो बड़े समभाव से सहन करती। अर्ध चेतना अवस्था में भी कभी रात को पानी नहीं माँगा। ५ अप्रैल को गुरुदेव की अनुमति पूरी सजगता के साथ सागारी संथारा का प्रत्याख्यान करवाया। उसके बाद धीरे-धीरे निश्चेष्ट होती गई। ऐसा लग रहा था शायद अब इन्हें यावत्जीवन संथारा नहीं करा सकेंगे। परंतु ६ अप्रैल को प्रतिक्रमण के दौरान उन्हें सजग, सचेत करने का प्रयास किया। उनसे कहा—यदि आप संथारा करना चाहते हैं तो वेदना को मत देखिए, पूरी शक्ति लगाकर, आँख खोलकर स्वीकृति दे तो हम संथारा करा देंगे। कुछ मिनटों के प्रयास के बाद पूरी जागरूकता के साथ आँखें खोली। पूछने पर हल्की सी गर्दन, होट हिलाकर स्वीकृति दी। स्थिति नाजुक देखते हुए प्रतिक्रमण के बीच संथारा का प्रत्याख्यान करवाया, खमतखामना किए, सरणे सुनाए। श्वास की गति बदली और अहोभाव के ग्यारह मिनट के संथारे के साथ देह को त्याग दिया। उनका ६३ वर्ष का संयम पर्याय समता, सहिष्णुता एवं आत्मबल के साथ स्वीकृत संथारे के कारण और अधिक धन्य बन गया।

उस निर्मल आत्मा के प्रति अनंत श्रद्धांजलियाँ

शांति का मूल मंत्र है - अहिंसा

भुवनेश्वर, उड़ीसा।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में 'विश्व शांति में अहिंसा की भूमिका' विषय पर अहिंसा संगोष्ठी का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में आंध्र प्रदेश के राज्यपाल विश्वभूषण हरिचंदन विशेष रूप से उपस्थित थे। कार्यक्रम में महासभा के अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया, तेरापंथी सभा के अध्यक्ष बच्छराज बेताला, भवन समिति के अध्यक्ष सुभाष भूरा आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि शांति का मूलमंत्र है -अहिंसा। अहिंसा सभी जीवों के लिए कल्याणकारी है। अहिंसा को माता की उपमा दी गई है। अहिंसा माता की शरण में आने वाला निश्चित ही शांति को प्राप्त होता है।

इस अवसर पर राज्यपाल विश्वभूषण हरिचंदन ने कहा कि हर जीव को जीवन जीने का अधिकार है। अहंकार से सिर्फ नुकसान होता है। सत्य, अहिंसा, शांति, करुणा को ध्यान में रखकर हर मानव को आगे बढ़ना चाहिए।

स्वागत भाषण सभा अध्यक्ष बच्छराज बेताला ने किया। मंगलाचरण बालमुनि कुणाल कुमार जी ने अहिंसा गीत के संगान से किया। आभार ज्ञापन सुभाष भूरा ने व संचालन मुनि परमानंद जी ने किया।

शासनश्री साध्वी गुणमाला जी के प्रति

अनशन दीप जलाया

● साध्वी श्रेयसप्रभा ●

अनशन दीप जलाया।
शासनश्री गुणमाला जी ने जीवन धन्य बनाया।।

समयं गोयम्! मा पमायए, है आगम की वाणी,
जप माला में लीन सदा, स्वाध्याय सुधा सहनाणी।
देह वेदना सहकर तुमने, समता पाठ पढ़ाया।।

आत्मा भिन्न, शरीर भिन्न है, मंत्र जाप सुखकारी,
शासनमाता शक्ति देना, पल-पल रटन लगाती।
आत्म पौरुष से जीती बाजी, अद्‌भुत शौर्य जगाया।।

क्षमता, समता, सहज सरलता, सबको लगती प्यारी,
समय-समय पर सद्‌संस्कारों की, खिलती थी क्यारी।
शासन गौरव की सन्निधि में, संयम जीवन महकाया।।

गुरुत्रय की सुख सन्निधि, पाकर भाग्यलता विकसाई,
महाश्रमण की छत्रछाव में अनुपम ऊर्जा पाई।
पंडित मरण वरण कर तुमने, गण गौरव बढ़ाया।।

लय : संयममय जीवन---

अर्हम्

● साध्वी प्रेक्षाप्रभा ●

शासनश्री के चरणों वंदन-वंदन है।
अनशनमय शुभ जीवन का अभिनंदन है।।

गुरु तुलसी चरणों आए, संयम सौरभ महकाये।
दिन शरद् पूर्णिमा भाये, मन में उल्लास जगायें।
सतिवर वंदन है।।

किस्तुरांजी का संरक्षण, पाया ऊर्जामय प्रशिक्षण।
सत्संस्कारों का शिक्षण, पल-पल बना था विलक्षण।
भाग्य का चंदन है।।

अध्ययन, लेखन अरु प्रवचन, जप, तप को करें नमन मन।
था सुंदर समय प्रबंधन, जागृत जीवन का क्षण-क्षण।
गण वन नंदन है।।

उजली काया, उजला मन, सबके सह था अपनापन।
गण, गुरु निष्ठा थी अनुपम, ऋजुता, मृदुता को वंदन।
भक्ति का स्पंदन है।।

समता को शीष झुकाएँ, तेरी सहज सरलता भाएँ।
गण फुलवारी, विकसाएँ, जय हो जय गीत सुनाएँ।
महके गण गुलशन है।।

गण का गौरव नित गाती, प्रमुदित मन गीत रचाती।
जीवन की बाजी जीती, नित शांत-सुधारस पीती।
कण-कण पुलकन है।।

रचती आस्था रंगोली, देती शिक्षा अनमोली।
भरती खुशियों की झोली, मिश्री ज्यों मीठी बोली।
चरणों वंदन है।।

गुरुत्रय का आशीष पाया, पथ आत्मशुद्धि का भाया।
भैक्षव गण का शुभ साया, लक्षित मंजिल को पाया।
श्रद्धा का स्पंदन है।।

लय : महावीर का नाम---

श्रीजैनश्वेताम्बरतेरापंथधर्मसंघेन
तेरापंथस्य एकादश-आचार्यश्रीमहाश्रमणस्य षष्टिपूर्तिदिवसे
युगप्रधानपदाभिषेकस्यावसरे
समर्पितम् अभिषेकपत्रम्

णमोत्थुणं
समणस्स
भगवओ महावीरस्स

युगप्रधान-पदाभिषेकः

जिनशासनगगने यदा भिक्षु-
भास्करस्योदयो जातः तदा
'तेरापंथ' इति
नाम्ना विश्रुतो ऽभवदयं
धर्मसंघः। तस्य एकादश-
शासनाधिपतिभिः स्वनामधन्य-
महोदयाचार्यमहाश्रमणैः नवनवोन्मेषकारिणिप्रज्ञया
विपुलसंख्यायां चामत्कारिण्यः उपलब्धयः संप्राप्ताः। यथा-
❀ साधिकाष्टादशसहस्रसहस्रमीटरप्रमाणा दीर्घा अहिंसायात्रा। त्रिराष्ट्रेषु,
विंशति-राज्येषु च भवतां चरणरजसां न्यासोऽभवत्। अहिंसायाः सिंहनादेन एतेषु क्षेत्रेषु सद्भावना-नैतिकता-मादकपदार्थसेवनमुक्तिरूपेण सूत्रत्रयेण
बहूनां बहूनां जनानां जीवनेऽलौकिकानन्दस्य चकार वृष्टिम्। ❀ विशिष्ट-प्रबन्धकौशलस्य साक्षी अस्ति परिषन्नौकानां (कल्याण-समीक्षा-
बहुश्रुतादीनां) सफलनिर्वाहकत्वम्। ❀ अन्तःसाम्प्रदायिक-सौहार्दक्षेत्रे विभिन्न-संप्रदायाणामाचार्यैः सार्धं नैकट्यं स्थापितम्
सर्वधर्मसद्भावनायाश्च ज्योतिः विशदीकृतम्। ❀ भवतामलौकिके व्यक्तित्वे दरीदृश्यन्ते महाश्रमिक-
महातपस्वि-श्रमणसंस्कृतेरुद्गातृ-शांतिदूत-विनयशिरोमणि-आदि-नानाविधरूपाणि।
❀ सांवत्सरिकपर्वस्यायोजनं समस्तजैनसंघे एकस्मिन्नेव दिने स्यात् इति जैन-ऐक्यं संप्राप्तुं महान् प्रयासः।
❀ विदेशे नेपालराष्ट्रे तेरापंथाधिपतीनां सफलप्रावृट्प्रवासः। ❀ अकम्पसंकल्पेन भयावहविघ्नबाधायुक्तकालेऽपि
संपन्ना अहिंसायात्रा निर्बाधतया। ❀ श्रावकवर्गस्य आध्यात्मिकविकासाय शनिवासरस्य सामायिकोपासनायाः
उपक्रमः, सुमंगल-साधनायाः उपक्रमश्च तथा साधु-साध्वीवर्गस्य ज्ञानविकासाय महाप्रज्ञश्रुताराधना
पाठ्यक्रमश्च भवद्भिः प्रारब्धाः। ❀ भवतां प्रधानसंपादकत्वे त्रयोदश-आगमग्रन्थानां
प्रकाशनम्। ❀ युगपत् त्रयश्चत्वारिंशद्-भागवती-दीक्षायाः अभिनवकीर्तिमानम्।
❀ भवद्भिः न केवलं धर्मप्रभावनाक्षेत्रे प्रबल-पुरुषार्थदीपः प्रज्वलितः
अपितु सामाजिकक्षेत्रेऽपि परिष्कारमूलकं महत्कार्यं सम्पादितम्।।
एतद्रूपेण स्वकीयेन कर्तृत्वेन आचार्यवर्यैः स्वयुगे प्राधान्यं प्रकृष्टा
प्रसिद्धिश्च सम्प्राप्ता। अनेन गौरवान्वितः विनम्रःचतुर्विधः
तेरापंथधर्मसंघः शासनमातृकृपया स्वानुशास्तुः
आचार्यश्रीमहाश्रमणस्य युगप्रधान-पदाभिषेकं
कुर्वाणः चित्ताह्लादमनुभवतितराम्।
जयतु! जयतु! जयतु! चिरं नन्दतु!
नन्दतु! नन्दतु! वि. सं. २०७९,
वैशाख-शुक्ला-नवम्यां,
मंगलवासरे (१०.५.२०२२),
सरदारशहरनगरे, राजस्थाने।

विनयावनत
तेरापंथ धर्मसंघः
प्रस्तुतिः
बहुश्रुतपरिषद्

युगप्रधान

चिरायु हो

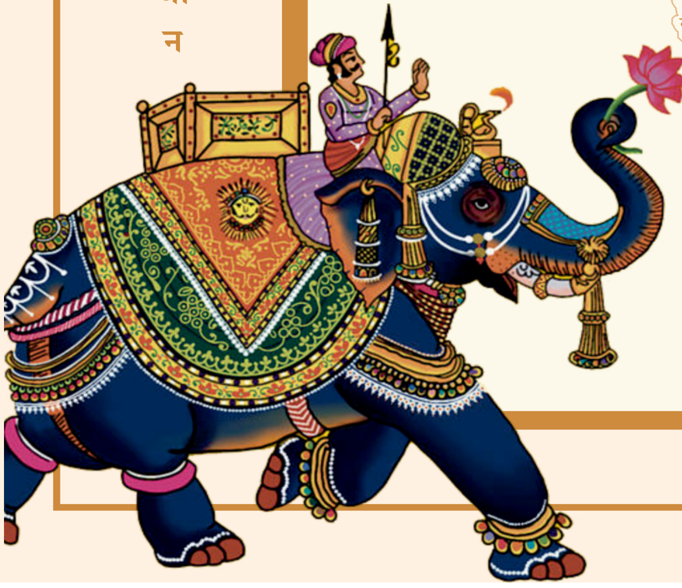

।।जैनं जयतु शासनम्।।

तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण के 'युगप्रधान पदाभिषेक' के अवसर पर सविनय-समर्पित

वर्धापना-पत्र

जह दीवो दीवसयं पइप्पए दिप्पए य सो दीवो।
दीवसमा आयरिया अप्पं च परं च दीवेंति।।

वीतरागता के मूर्तिमान प्रतीक!

आप अनुत्तर साम्ययोगी हैं। आपश्री का सौम्य मुखमण्डल समता, प्रशांतचित्तता एवं चैतसिक निर्मलता का प्रतीक है। समत्व प्रतिष्ठित आपकी चेतना को राग-द्वेष की ऊर्मियां छू भी नहीं पाती। आपके श्वास-प्रश्वास में वीतराग वाणी अनुगुंजित रहती है।

महान श्रुतधर मनस्वी प्रवर!

अपनी विशिष्ट मेधा और मनस्विता से आप साहित्य जगत् की विशिष्ट सेवा कर रहे हैं। जैनागमों के कुशल संपादन के महाअनुष्ठान के पुरोधा बनकर आपने कई ग्रंथ-रत्न विद्वज्जगत को उपहृत किए हैं। आपकी बहुआयामी लोकमंगलकारी प्रवृत्तियों में जैनागमों का तथा आचार्य भिक्षु के साहित्य का संपादन कार्य वरीयता लिये हुए है।

आप संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी, अंग्रेजी आदि भाषाओं के ज्ञाता हैं। आप प्रखर प्रवक्ता, प्रवर श्रोता और मनस्वी साहित्यकार हैं। नवीन और मौलिक विचारों से युक्त आप द्वारा प्रणीत अनेक साहित्यिक कृतियां पाठक वर्ग के लिए प्रेरक और समाधायक सिद्ध हो रही हैं।

कल्याण कल्पतरु!

आपने आचार्यश्री तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में सौ मुमुक्षुओं को तथा अपने आचार्य-काल में बड़ी संख्या में भव्यात्माओं को दीक्षा प्रदान कर उनके कल्याण का पथ प्रशस्त किया है।

अहिंसा-यात्रा के प्रणेता महर्षि प्रवर!

आपने साधिक सप्तवर्षीय अहिंसा-यात्रा द्वारा यायावरी की महागाथा लिखी है। लाखों करोड़ों लोग आपके संदेशों से प्रभावित होकर सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के नियमों से संकल्पित हुए हैं। संयम ग्रहण करने के बाद साधिक 53000 कि.मी. की ऐतिहासिक पद-यात्रा में हिन्दुस्तान के 23 राज्यों तथा नेपाल-भूटान की विदेशी धरती को पावन बनाया है।

शासन प्रभावक महान जैनाचार्य!

विनयावनत
श्रमण-श्रमणी एवं समणी परिवार

तेरापंत धर्मसंघ के ग्यारहवें अधिशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के युगप्रधान पदाभिषेक के अवसर पर समर्पित

अभिनंदन पत्र

हे जैन जगत के महासूर्य!

आपके सक्षम, सबल, गतिशील नेतृत्व में समग्र जैन समाज ही नहीं, मानवजाति विकास के पथ पर अग्रसर है। जैन एकता के लिए किए जाने वाले आपके प्रयास जिनशासन को नई ऊंचाई देने वाले हैं। इसलिए हे युगप्रधान ! युग आपका अभिनंदन करता है।

हे विश्ववत्सल!

लोककल्याण की भावना से अनुप्राणित आपके फौलादी संकल्प ने करुणा की धार बहाई है। अहिंसा-यात्रा के माध्यम से सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति की त्रिवेणी प्रवाहित कर आपने अध्यात्म का नवीन संस्करण प्रस्तुत किया है। इसलिए हे युगप्रधान ! युग आपका अभिनंदन करता है।

हे अध्यात्म के महास्रोत!

आपकी वात्सल्यमयी दृष्टि, आश्वस्त करती मुस्कान, आशीर्वाद मुद्रा में उठे हाथ भक्त- अभक्त सभी को परमशांति का अनुभव कराते हैं। सत्य की परिक्रमा करता संभाषण आपकी वचनसिद्धि का आधार है। शनिवासरीय सामायिक और सुमंगल साधना का अवदान जनचेतना के ऊर्ध्वारोहण की महाविधि है। इसलिए हे युगप्रधान ! युग आपका अभिनंदन करता है।

हे युगनायक!

सदा अध्यात्म में निमग्न आपकी ऊर्जा युगीन समस्याओं का सार्थक समाधान प्रदान करती है। भूकम्प जैसी त्रासदी और कोरोना जैसी महामारी के समय आपकी अभय साधना ने जनमानस में अभय के प्रकम्पन संप्रेषित किए हैं। इसलिए हे युगप्रधान ! युग आपका अभिनंदन करता है।

हे मानवता के महामंगल!

आर्हत्वाङ्मय पर आधारित आपके प्रवचन व तर्कपूर्ण एवं क्रांत विचारों का संवाहक साहित्य आधुनिक चिंतनधारा में शाश्वत मूल्यों का समावेश करते हैं। मानवमनीषा आपके अनगिन अवदानों से समृद्ध बनी है। इसलिए हे युगप्रधान ! युग आपका अभिनंदन करता है।

श्रद्धावनत

तेरापंथ विकास परिषद
पारमार्थिक शिक्षण संस्थान
अणुव्रत विश्व भारती (अणुविभा)
अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास
प्रेक्षा इन्टरनेशनल
प्रेक्षा विश्व भारती

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा
अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद
अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल
तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम

जैन विश्व भारती
जैन विश्व भारती मान्य विश्वविद्यालय
अमृतवाणी
जय तुलसी फाउण्डेशन
आचार्य भिक्षु समाधि स्थल संस्थान
आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान

एवं
समग्र तेरापंथ श्रावक श्राविका समाज
१० मई २०२२, सरदारशहर(राज.)

✦ जीवन में समता भाव प्रस्फुटित हो जाता है तो मानना चाहिए कि व्यक्ति के जीवन में धर्म अवतरित हो गया।

—आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्य श्री महाश्रमणजी के युगप्रधान पदाभिषेक समारोह

के गौरवशाली अविस्मरणीय पल

अक्षय तृतीया के विविध कार्यक्रम

भगवान ऋषभ विश्व संस्कृति के आदि पुरुष थे

बोरावड़।
भगवन ऋषभदेव विश्व संस्कृति के आदि पुरुष थे। उन्हें भारतीय परंपरा के ही नहीं बल्कि मानव संस्कृति के आद्य निर्माता के रूप में माना जा सकता है। वे एक पहले पुरुष थे जिन्होंने भोग भूमि के मानवों को कर्म भूमि में जीने लायक बनाया। ये विचार अक्षय तृतीया पारणा महोत्सव के अंतर्गत मुनि चैतन्य कुमार 'अमन' ने कहे।

मुनिश्री ने आगे कहा कि भगवान ऋषभ की तपस्या का अनुसरण करते हुए आज अनेक लोग वर्षीतप करते हैं। यथापि तपस्या करना आसान नहीं होता। उसमें एक वर्ष तक एक दिन उपवास व एक पारणा करना बहुत कठिन है। जिसका मनोबल, संकल्पबल, संयम बल, आत्मबल मजबूत होता है वे ही इस प्रकार तपस्या करके जन्मों के कर्मों को काटकर सिद्धालय की ओर अग्रसर हो सकते हैं।

मुनि सुबोध कुमार जी ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए भगवान महावीर एवं तपस्या के बारे में बहुत कुछ प्रेरणाएँ दी। इस अवसर पर मुनि चैतन्य कुमार 'अमन' ने वर्षीतप करने वाले भाई-बहनों से ईक्षुरस ग्रहण किया, जिससे तपस्वियों ने अपने प्रति कृतार्थता की अनुभूति की। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि तहसीलदार दिनेश चंद्र शर्मा, पूर्व विधायक भंवरलाल राजपुरोहित, पूर्व प्रधान हिम्मत सिंह राजपुरोहित, नगर परिषद, चेयरमैन भंवरलाल मेधवाल, दिलीप सिंह चौहान, प्रेम सिंह पटेल, आदि तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष गजेंद्र बोथरा एवं साथी कार्यकर्ताओं द्वारा स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया गया। तपस्वी अमरचंद बोथरा के सातवें वर्षीतप, निर्मला देवी बोथरा के दूसरे वर्षीतप तथा विजयादेवी बाफना के पाँचवें एकाशन वर्षीतप पर तेयुप द्वारा स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मान किया गया।

इस अवसर पर अनेक भाई-बहनों ने तप-अनुमोदना में अपने विचार गीत-नाटिका आदि प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में तेयुप मंत्री विकास चोरड़िया, आगंतुक महानुभावों का आभार ज्ञापन करते हुए विचार व्यक्त किए। तपस्वी भाई अमरचंद बोथरा ने आगामी आठवें वर्षीतप का प्रत्याख्यान किया।

तप के महान कीर्ति स्तंभ का नाम है - भगवान ऋषभ

कोटा।
साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा, कोटा के तत्त्वावधान में गुलाबबाड़ी स्थित तेरापंथ भवन में अक्षय तृतीया का कार्यक्रम समायोजित हुआ। इस अवसर पर साध्वी डॉ० सुधाप्रभाजी के वर्षीतप एवं अनीता के वर्षीतप एवं अक्षेंद्र पावेचा के एकासन वर्षीतप की अनुमोदना की। साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि जन-जन को मुक्ति का पथ दिखाने वाले आदिनाथ भगवान ने आज के दिन लगभग ४०० दिन की तपस्या को संपन्न किया। दुनिया को दान देने की विधि का प्रवर्तमान करने वाले भगवान ऋषभदेव की आत्मा ने बहुत पहले ही शिवत्व को प्राप्त कर लिया।

साध्वी डॉ० सुधाप्रभाजी ने वर्षीतप के द्वारा भगवान ऋषभ को श्रद्धा सुमन अर्पित किए। भाई अक्षेंद्र पावेचा एवं अनीता पावेचा ने जोड़े से वर्षीतप किया है। साध्वी सुधाप्रभाजी ने कहा कि जीवन को नवीनता का पथ देने वाली अनुपमेय स्फूर्णा का नाम है – भगवान ऋषभ।

भगवान ऋषभ आज जिनशासन में हजारों-हजारों तपस्वी वर्षीतप कर भगवान ऋषभ को तप का अर्ध समर्पित कर रहे हैं। मैं भी गुरु भक्ति से गुरु के आशीर्वाद से तथा साध्वीश्री जी के वात्सल्य संभ्रत ऊर्जा से एवं साध्वी कर्णिकाश्री जी, साध्वी समतवयशाजी एवं साध्वी मैत्रीप्रभाजी के सहयोग से वर्षीतप के पथ पर अग्रसर हुई अब संपन्नता की ओर है, यही कामना करती हूँ मेरा वर्षीतप सानंद संपन्न हो। गांभीर्य का वरण करने वाली मेरी अग्रजा भगिनी साध्वी अणिमाश्री जी एवं साध्वी मंगलप्रज्ञा जी की अति वत्सलता ने मुझे सदा आगे बढ़ाया है, सबके प्रति अहोभाव के साथ कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ। साध्वी कर्णिकाश्री जी ने कहा कि जो व्यक्ति तप का वर्षीतप नहीं कर सकते वो मौन का द्रव्य सीमा का क्रोध विजय का समता का वर्षीतप कर भगवान ऋषभ की अभ्यर्थना करें।

साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने मंच संचालन करते हुए कहा कि समस्या का समाधान देने वाली चेतना का नाम है – भगवान ऋषभ तलहटी से शिखर तक की यात्रा करने वाले शिखर पुरुष का नाम है–भगवान ऋषभ। साध्वी सुधाप्रभाजी ने लगभग ११ तप की लड़ी, कंठी तप धर्मचक्र तप, वर्षीतप करके तपस्या की पंक्ति में अपना नाम लिखाया ही आपकी जान आराधना तप आराधना निरंतर बढ़ती रहे।

साध्वी समत्वयशा जी ने सुमधुर स्वरों के साथ साध्वी सुधाप्रभाजी के तप की अनुमोदना की। साध्वी कर्णिकाश्री जी, साध्वी सुधाप्रभाजी, साध्वी समत्वयशाजी, साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने भाई अक्षेंद्र पावेचा एवं बहन अनीता पावेचा के वर्षीतप की अनुमोदना में गीत प्रस्तुत किया। सभा के पूर्व अध्यक्ष वरिष्ठ श्रावक रतनलाल जैन, सभा अध्यक्ष संजय बोथरा, मंत्री धर्मचंद जैन, महिला मंउल अध्यक्षा उषा बाफना, तेयुप के पूर्व अध्यक्ष महावीर हीरावत, अणुव्रत समिति के मंत्री भूपेंद्र बरड़िया, योगेश पावेचा ने साध्वी सुधाप्रभाजी एवं तपस्वी भाई-बहनों के तप की अनुमोदना की।

साध्वीश्री के संसारपक्षीय भाई शांतिलाल सेठिया, बहनोई अशोक बरड़िया, भाभी उपासिका ललिता सेठिया, बहन संगीता बरड़िया एवं माँ महादानी श्राविका भीखी देवी सेठिया ने गीत व वक्तव्य के द्वारा अपने भाव व्यक्त किए। तपस्वी भाई अक्षेंद्र पावेचा ने उद्‌गार व्यक्त किए, महिला मंडल की बहनों ने सुमधुर गीत का संगान किया। मंत्री धर्मचंद जैन एवं हेमलता जैन ने मंगल संगान किया, सभा, महिला मंडल, अणुव्रत समिति, तेयुप द्वारा सम्मान किया गया।

मानव संस्कृति के उन्नायक थे भगवान ऋषभ

पुणे।
जैन धर्म का महापर्व अक्षय तृतीया का समायोजन साध्वी काव्यलता जी के सान्निध्य में अहिंसा भवन में किया गया। दो तपस्विनी बहनें प्रवीणा मरलेचा व हिमांगी ठक्कर की तप अनुमोदना की गई।

साध्वी काव्यलता जी ने कहा कि भगवान ऋषभ मानव संस्कृति के उन्नायक पुरुष थे। कर्म युग का प्रारंभ कर मानव जाति के उपकारी पुरुष बन गए। भगवान ऋषभ इस अवसर्पिणी के प्रथम राजा, प्रथम मुनि, प्रथम भिक्षाचर थे।

आज का दिन बहुत महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि भगवान ऋषभ ने एक वर्ष के अंतराल से राजा श्रेयांस के हाथ से ईक्षु रस ग्रहण कर पारणा किया। इस तप का अनुसरण आज भी कई लोग करते हैं।

इस अवसर पर साध्वी ज्योतियशाजी ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए साध्वी सुरभिप्रभाजी के साथ सुमधुर गीत का संगान किया। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष महावीर कटारिया, महिला मंडल की अध्यक्षा पुष्पा कटारिया ने भगवान ऋषभ की अर्चना कर तपस्वियों की अनुमोदना की। तेरापंथ कन्या मंडल ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। तपस्विनी प्रवीण मरलेचा के पारिवारिकजन रिनल रुणवाल, विनय मरलेचा ने विचार प्रस्तुत किए व मरलेचा परिवार की बहनों ने गीतिका प्रस्तुत की। महिला मंडल द्वारा अभिनंदन पत्र भेंट किया गया। आभार ज्ञापन तेयुप के अध्यक्ष धर्मेन्द्र चोरड़िया ने किया।

ट्रेनर्स रिफ्रेशर वर्कशॉप का आयोजन

पर्वत पाटिया, सूरत।
सूरत में पहली बार ट्रेनर रिफ्रेशर वर्कशॉप का आयोजन पर्वत पाटिया तेरापंथ भवन में हुआ। इस कार्यशाला में लगभग २२ ट्रेनर्स ने भाग लिया। पहले सत्र में जोनल कोऑर्डिनेटर मनोज सुराणा ने ध्यान तथा रतनलाल आंचलिया ने आसन प्राणायाम करवाए। प्रशिक्षिकाओं द्वारा प्रेक्षा गीत से मंगलाचरण के साथ दूसरा सत्र प्रारंभ हुआ। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष प्रशिक्षक कमल पुगलिया ने स्वागत वक्तव्य दिया।

मनोज सुराणा ने प्रेक्षाध्यान कार्यक्रमों का प्रारंभ एवं समापन की रूपरेखा, अनुशासन आदि की जानकारी तथा सूत्रों के उच्चारण, अर्हत वंदना, त्रिपदी वंदना एवं आसनों के बारे में कॉमन सुधार करवाए। डॉ० माया ने अचानक चक्कर आने पर मेडिकल सहायता न मिलने पर आपातकालीन उपायों के बारे में प्रशिक्षण दिया। पुष्पा पोखरणा ने संपूर्ण कायोत्सर्ग का प्रयोग करवाया।

तीसने सत्र में सरिका बैद ने वक्तृत्व कला पर पीपीटी के माध्यम से प्रशिक्षण दिया। जयसुख भाई मेहता ने लेवल २ साधना शिविर के अनुभव बताए। How to Concentrate? शीर्षक से संध्या रायसोनी ने भाव क्रिया के बारे में जानकारी दी तथा रेणु नाहटा ने प्रतिक्रिया विरति से संबंधित एक उपयोगी एक्टिविटी के बारे में मार्गदर्शन दिया।

रंजना भोलावत ने चार प्रकार के ध्यान के बारे में जानकारी दी। श्वेता रामपुरिया ने अच्छी आदतों को जीवन में उतारने के लिए उपयोगी एक्टिविटी के बारे में समझाया। श्वेता रामपुरिया ने तथा नीलम मेहता ने संयोजन किया। तथा प्रवीण ओस्तवाल ने आभार ज्ञापन किया।

जाँच शिविर का आयोजन

गुलाबबाग।
स्थानीय तेरापंथ भवन में टीपीएफ द्वारा जाँच शिविर का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ उपासिका सह-महिला मंडल अध्यक्ष बबीता गीड़िया ने नमस्कार महामंत्र से किया। तत्पश्चात टीपीएफ के अध्यक्ष पवन मालू ने सभी आगंतुकों एवं डॉ० सिद्धार्थ का स्वागत अपने किया। प्रसिद्ध डॉ० धीरज मरोठी के सहयोगी डॉ० सिद्धार्थ द्वारा घुटने और कूल्हे के दर्द का परीक्षा किया गया। लगभग ३५ मरीज लाभान्वित हुए।

इस कार्यक्रम में स्थानीय तेरापंथ सभा के अध्यक्ष विजय बैद एवं उनकी टीम, टीपीएफ की टीम तेयुप अध्यक्ष मुकेश सिंघी एवं उनकी टीम, तेरापंथ महिला मंडल टीम का सराहनीय योगदान रहा।

कार्यक्रम में महासभा उपाध्यक्ष नेमचंद बैद, टीपीएफ से राजेंद्र संचेती, राजकिशोर बैद, संजय संचेती, कुसुम संचेती, रवि बोथरा भी उपस्थित रहे। चारों संस्थाओं द्वारा डॉ० सिद्धार्थ का सम्मान किया गया। डॉ० सिद्धार्थ द्वारा प्रोजेक्टर पर घुटने एवं कूल्हे के दर्द के निवारण हेतु विस्तृत जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन रूपेश डूंगरवाल ने किया। लगभग ५० लोगों की उपस्थिति रही।

मंगलभावना समारोह

मदुरै।
साध्वी उज्ज्वलप्रभाजी का १७ दिवसीय प्रवास विविध प्रसंगों के साथ जुड़ा प्रवास रहा। साध्वीश्री जी ने मंगलभावना के अवसर पर कहा कि जीवन में कभी ऐसे क्षण या अवसर आते हैं जिस क्षण या अवसर को प्राप्त कर जीवन को नई दिशा प्राप्त होती हैं चेतना का ऊर्ध्वारोहण होता है। साधु-साध्वियों की सन्निधि, उनके प्रवचन, उनके दर्शन प्राप्त कर कईयों ने अपने जीवन को अध्यात्ममय बनाया है।

साध्वी अनुप्रेक्षाश्री जी ने कहा कि मनुष्य जन्म प्राप्त करना सौभाग्य है, वह सौभाग्य शतगुणित होता है जो मनुष्य जन्म का मूल्यांकन करता हुआ सजग रहता है। इससे पूर्व मंगलभावना समारोह में कोमल जीरावला ने मंगलाचरण, तेरापंथ सभा अध्यक्ष जयंतीलाल जीरावला, तेयुप मंत्री राजकुमार नाहटा, महिला मंडल अध्यक्ष नयना पारख, मधु पारख, सभा सहमंत्री गौतम गोलेच्छा, लक्ष्य जीरावला, कोमल जीरावला, पुलिकत बोकड़िया, नवदीप संकलेचा, महिला मंडल गीतिका एवं जैन समाज से डूंगरचंद श्रीमाल आदि ने अपनी भावना व्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन कन्या मंडल पूर्व संयोजिका मीठी गोलछा ने किया।

✦ *व्यक्ति यह सोचे कि मेरा मित्र कल्याणमित्र है या नहीं? मात्र टाइम पास करने के लिए किसी को अपना मित्र बनाना बड़ी बात नहीं है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

नवमनोनीत साध्वीप्रमुखाश्रीजी के लिए शुभकामना स्वर

अभिनंदन तुलसी-महाप्रज्ञ युग की अनुपमेय कलाकृति का

❐ साध्वी अणिमाश्री ❐

❐ साध्वी कर्णिकाश्री, साध्वी सुधाप्रभा, साध्वी समत्वयशा, साध्वी मैत्रीप्रभा ❐

१५ मई २०२२ को तेरापंथ धर्मसंघ के प्रांगण में हर्ष, आनन्द, उल्लास, उमंग व उत्साह के स्फुलिंग निकल रहे थे। चिंहु दिशाओं में अनिर्वचनीय खुशी का माहौल था। क्यों ?

क्योंकि शासन सरताज युगप्रधान आचार्य महाश्रमणजी ने तुलसी महाप्रज्ञ युग की अनुपमेय कलाकृति मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी को श्रमणीगण की सिरमोर बना दिया था। साध्वी समाज की मुकुटमणि के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया।

युगद्रष्टा पूज्यप्रवर ने युगानुकूल साध्वी प्रमुखा का चयन कर साध्वी समाज को ही नहीं सम्पूर्ण संघ को निश्चिंत बना दिया है। सरस्वती तनया सतिशेखरे! हमें तो ऐसा लगता है-

आपश्री का चयन साध्वी समाज के विश्वास का चयन है।
आपश्री का चयन आचार्य तुलसी की पारखी नजरों का चयन है।
आपश्री का चयन आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा तराशी गई प्रतिभा का चयन है।
आपश्री का चयन आचार्य महाश्रमण जी के असीम अनुग्रह का चयन है।
आपश्री का चयन शासनमाता के अगाध वात्सल्य का चयन है।
आपश्री का चयन प्रबुद्धता व प्रखर-चिंतन का चयन है।
आपश्री का चयन श्रद्धा व समर्पण का चयन है।
आपश्री का चयन निस्पृहता व निरहंकारिता का चयन है।
आपश्री का चयन सहजता व सरलता का चयन है।
आपश्री का चयन समता, ममता व क्षमता का चयन है।
आपश्री का चयन साधना की तेजस्विता व चारित्र की उज्जवलता का चयन है।
आपश्री का चयन विनम्रता व गंभिरता का चयन हो।
आपश्री का चयन अनुशासनप्रियता व मर्यादानिष्ठा का चयन है।
आपश्री का चयन श्रमशीलता व कार्यकुशलता का चयन है।
आपश्री का चयन ज्ञानरश्मि व चैतन्यरश्मि का चयन है।
आपश्री का चयन तप व जप की महाज्योत का चयन है।
आपश्री का चयन संध के सौभाग्य का चयन है।

आपश्री के विराट व्यक्तित्व को व्याख्यायित करने के लिए शब्दों का संसार अल्प है। फिर भी शब्दाकोश के कुछ शब्दों द्वारा साध्वी समाज के महाग्रंथ साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी के प्रभावशाली व्यक्तित्व को विश्लेषित करना चाहती हैं-

विनम्रता, गंभीरता, अनुशासनप्रियता के त्रिवेणी संगम का नाम है- साध्वी प्रमुखा विश्रुतविभाजी।

श्रद्धा, समर्पण, गुरुभक्ति व गणभक्ति के प्रकाश से स्वयं को प्रकाशित करने वाली दीपशिखा का नाम है-साध्वी प्रमुखा विश्रुतविभाजी।

हिम्मत व हौसले का अपर नाम है- साध्वी प्रमुखा विश्रुतविभाजी।

अनाशक्ति व निर्मलता का पर्याय है- साध्वी प्रमुखा विश्रुतविभाजी।

जो थके कदमों में उल्लास व उत्साह का संचार करती है, उस जीवनी शक्ति का नाम है- साध्वी प्रमुखा विश्रुतविभाजी।

हर अंधेरे मोड़ को आलोकित करने वाली आलोक रश्मि का नाम है- साध्वी प्रमुखा विश्रुतविभाजी।

ज्ञान की गंगोत्री का नाम है- साध्वी प्रमुखा विश्रुतविभाजी।

आपश्री के हर कदम में आलोक है। नयनों में नेह का अमृत है। आपके मस्तिष्क में दुर्लभ ज्ञान-मणियां है। आप संध का गौरव है। आपश्री के हृदय में छलकते प्रेम व करुणा के ज्योतिकलश आपश्री की जीवन-यात्रा को ज्योतिर्मय बना रहे हैं। हर क्षण आपश्री की सौम्यमुद्रा धरती पर ज्योतसना बिखेरती रहे। आप गणमाली महाश्रमण प्रभु की अनुशासन में साध्वी समाज का योगक्षेम करती रहें।

आपश्री के ममता के आंचल में सम्पूर्ण साध्वी समाज चित्तसमाधिस्थ रहकर साधना-आराधना करेगा। आपश्री का विराट व्यक्तित्व युग को नव संबोध प्रदान करेगा। आपश्री के नयनों से प्रवाहित नेह के निर्झर में अभिस्नात होकर अभ्यागत तोष की अनुभूति करेगा, ऐसा हमारा विश्वास है।

आपश्री के निराले नेतृत्व में आपश्री का साध्वी समाज संध में विकास के नए द्वार उद्घाटित करे। आपश्री की प्रेरक सन्निधि हम सभी के भीतर प्रेरणा का प्रदीप प्रज्ज्वलित करती रहे।

आप क्रोड़ दीवाली राज करो। युगों-युगों तक श्रमणीगण की रिछपाल करो, अहनिर्श आरोग्यलक्ष्मी का वरण करो आपका कार्यकाल यशस्वी, तेजस्वी व वर्चस्वी हो। आप अपने कर्तृत्व से संध के भाल पर कालजयी आलेख लिखें। हर-पल, हर-क्षण पूज्यप्रवर की अमृतमयी दृष्टि का अमृतपान करते रहें। मंगलकामना! शुभकामना! श्रद्धाप्रणति

अभिवंदना! अभिवंदना!! अभिवंदना!!!
बधाई! बधाई!! बधाई!!!

नवम साध्वीप्रमुखाश्री के मनोनयन पर

दोहे

● मुनि कमल ●

साध्वी प्रमुखा का सुना, मनोनयन सुखकार।
महाश्रमण गुरुदेव की, महिमा अपरंपार।।

विश्रुत विभाजी बन गई, सतियों की शिरमोड़।
नवमी प्रमुखा जी बनी, उदित हुई नव भोर।।

तेरापंथ समाज की, दिग् दिगन्त में ख्यात।
समय-समय पर हैं मिले, योग्य श्रेष्ठ गणनाथ।।

गुरु की करुणा दृष्टि से, सफल सकल नित काज।
महाश्रमण युग-युग तपो, अंतर मन आवाज।।

दीक्षा दिन पर रच दिया, गुरुवर ने इतिहास।
रोम-रोम पुलकित हुए, सबमें नव उल्लास।।

वर्धापन गीत

● साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभा ●

वर्धापन का पल यह पावन, वर्धापन सतिराज करें।
जिसने सुधा पिलाई गण को, गणनायक पर नाज करें।।

लेकर नवउमंग तरंगे, उतरा नभ से उजला प्रात।
महक उठा शासन का सरवर, खिले नए-नए जलजात।
दीक्षा दिन पर शासनशेखर, नवयुग का आगाज करे।।

हो विश्रुत विभास्वर जग में, मंगल भाव सजात हैं।
महाश्रमण गुरुवर रिझवारी, पाकर मोद् मनाते हैं।।
शीघ्र वरो तुम स्थान दिलों में, यही कामना आज करें।।

अभिनंदन आचार्यप्रवर का, साध्वीप्रमुखा श्री वंदन।
अभिनंदन इस नई सुबह का झंकृत जिसमें नवस्पंदन।
पाकर इंगित पूज्यप्रवर का श्रमणीगण पर राज करें।।

मुक्तक

● साध्वी अनुप्रेक्षाश्री ●

साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी का अभिनदन
झूम रहा मन का वृंदावन
खूब बधाएं मंगल गाएं
हर्षित पुलकित धरागगन

महाप्रज्ञ की हो अनुपमेय कृति
अध्यात्म की हो तुम प्रतिमूर्ति
साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी
स्वीकारो श्रद्धाभक्तिमय प्रणति

वर्धापना में गूंज रहें है शंख
मेरी खुशियों की लगे हैं लाखों पंख
साध्वीप्रमुखाश्री जी का मनोनयन
जागी अंतर्मन में नई उमंग

आज का यह सुनहरा अवसर
बह रहा है भक्ति का निर्झर
तेरे हर ईशारे पर
मैं रहूं सदा ही तत्पर

आचार्यश्री महाश्रमण जी को युगप्रधान के उपलक्ष्य में विशेष

करिश्माई व्यक्तित्व के नायक - आचार्यश्री महाश्रमण

❒ शासनश्री साध्वी सोमलता ❒

संस्कृत साहित्य में वर्णन आता है–

तुंगत्वमितरा नाद्रौ,
नेदं सिन्धावगाधता।
अलंधनीयता हेतो,
रुभयं तन्मनस्विनि।।

कहा गया है कि पर्वत में ऊँचाई होती है पर गहराई नहीं होती। इसके विपरीत समुद्र में गहराई होती है पर ऊँचाई वहाँ नहीं होती। जीवन के निर्माण में ऊँचाई और गहराई की संयुति अपेक्षित होती है। इस अपेक्षा को मूर्तिमान होते देखना हो तो वे मनस्वी महापुरुषों में देखी जा सकती है। महान व्यक्तियों का जीवन इसी युगल का संगमस्थल होता है। महर्षि महायोगी तेरापंथ धर्मसंघ` एकादशम अधिशास्ता पूज्यश्री महाश्रमण के जीवन में दोनों विशेषताएँ खास–उच्छ्वास की तरह लयलीन हैं।

रत्नगर्भा वसुंधरा सरदारशहर। जहाँ पर रहता था झूमरमल जी दुगड़ का परिवार। उनकी गृहलक्ष्मी नेमांबाई की कुक्षि से जन्मा मोहनकुमार। मोहन किस्मत का धनी था। कुछ लोग सफलता के भव्य प्रासाद में एक-एक पायदान पार करके पहुँचते हैं तो कोई-कोई लिफ्ट से सीधा ही पहुँच जाता है। मोहन के सौभाग्य ने छलाँग लगाई औश्र मोहन से मुनि मुदित फिर महाश्रमण मुदित फिर युवाचार्य महाश्रमण और एक अति शुभ वेला में तेरापंथ के आचार्य महाश्रमण का ताज पहन लिया।

आचार्यश्री महाश्रमण ऋजुप्राज्ञ, मित-मधुरभाषी, करुणावान और पुरुषार्थ के प्रखर पुजारी हैं। अटूट संकल्प शक्ति और फौलादी निर्णय लेना आपकी नियति है। मितभाषण तो आपकी खास पहचान है। अर्हतवाणी को आत्मसात करने-करवाने में हर पल व्यस्त रहते हैं। आपश्री को लोग इस युग के भगवान के रूप में देखते हैं। आपने एक-एक साँस पर जागरूकता के प्रहरी बैठा रखे। 'समयं गोयम मा पमायए' साधना के इस मूल मंत्र को कभी भी निद्राधीन होने नहीं देते। कहा भी है–

रात सुबह का इंतजार नहीं करती,
खुशबू मौसम का इंतजार नहीं करती,
समय अमूल्य है, इसे व्यर्थ मत गँवाओ, क्योंकि–
जिंदगी वक्त का इंतजार नहीं करती।।

सुदूर प्रदेशों की पदयात्रा करना आपका नैसर्गिक रुझान है। आप महान यायावर हैं। अहिंसा यात्रा के माध्यम से आपने दिल्ली, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल, नागालैंड, असम, मेघालय, झारखंड, ओडिसा, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, पुडुचेरी, केरल, कर्नाटक, महाराष्ट्र, तेलंगाना, छत्तीसगढ़ और राजस्थान–भारत के इन बीस राज्यों तथा नेपाल-भूटान आदि विदेशों की यात्रा करके जैन धर्म को जनधर्म का जामा पहनाने का सघन प्रयत्न किया। जो इतिहास का दुर्लभ अध्याय बन गया। १८०० किलोमीटर की धरती को अपनी चरणरज से पावन करने वाले आचार्य महाश्रमणजी विविध विशेषताओं के तीर्थ हैं।

पूज्यप्रवर के कार्यक्रमों में इंद्रधनुषी रंग हैं। प्रवचन में गुलाब सी महक है। संगीत में रजनीगंधा की भीनी-भीनी सुवास है और नेतृत्व में नगरबेल की तरह कीर्ति और करुणा प्रसारित होती रहती है। आपका दीर्घकालिक संयम का सफरनामा रोमांचक और रोचक संस्मरणों की अटैची है तो आचार्य काल का द्वादश वर्षीय कार्यकाल कीर्तिमानों की बैंक है। उनमें से कुछेक प्रसंग अद्भुत, ऐतिहासिक और अद्वितीय हैं। आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ की जन्मशती के संदर्भ में सौ दीक्षाएँ, दोनों विभूतियों के साहित्य का शताधिक पुस्तकों के रूप में संयोजन, संपादन, काठमांडू के प्राणघातक भूकंप में अडोल-अकंप रहना, पूर्व निर्धारित कार्यक्रमों को कोविड के भयावह भूचाल में भी यथावत रखना। प्रलयंकारी महामारी में पूरी धवल सेना की सुरक्षा, मुख्यमुनि, साध्वीवर्या जैसे कल्पनातीत पदों का सृजन, नक्सलियों, आतंकवादियों मनुष्यों को अहिंसा की दीक्षा देना आदि-आदि। नित्य नवीन सदाबहार अवदानों की शृंखला द्रौपदी के चीर की तरह विस्तृत है जिसका उल्लेख छोटे से आलेख में संभव नहीं।

कालजयी करिश्माई व्यक्तित्व के नायक आचार्यप्रवर को युगप्रधान आचार्य के सम्मान अलंकरण से अलंकृत कर पूरा धर्मसंघ ही नहीं पूरी मानव जाति प्रफुल्लित है। प्रसन्न है। भाव-विभोर है। आप अलौकिक शक्तिपुंज हैं। इसलिए कहा है–

गम को उल्लास में बदल देते हैं।
बहम को विश्वास में बदल देते हैं।
मात्र मोहक मुस्कान बाँटकर मेरे गुरु।
तम को प्रकाश में बदल देते हैं।।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण की वरदायी अनुशासना का वंदन, अभिनंदन।

आचार्यश्री महाश्रमण

● कवि योगेंद्र शर्मा ●

हे धवल धर्म ध्वज के धारक
हे शांति अहिंसा व्रत-वाहक
अध्यात्म घोष के पाञ्चजन्य
तुमसे जननी की कोख धन्य
हे श्रमण सूत्र के महाप्राण
तुम सदाचार के हो प्रमाण
हे तुलसी के तपशील यज्ञ
तुम शुद्धि बुद्धि से महाप्रज्ञ
आचारशील गंभीर धीर
कैवल्यज्ञान के महावीर
अणुव्रत अनुशासित महाश्रमण
भारत के भाषित अलंकरण
द्युतिमान पुंज आधारभूत
तेरापंथी जग के मरुत
वसुधैव शांति के अग्रदूत
हे भारत के सच्चे सपूत

जर्जर पतझर के मौसम को
सुरभित मधुमास बना डाला।
दो कदम चले तो कदमों से
गर्वित इतिहास बना डाला।

वह धर्मवरा उर्वरा धन्य
सरदारशहर की धरा धन्य
जब युवाचार्य मुनि मुदित भए
भावों से घट-घट भरा धन्य
मुद मंगल का अतिरेक हुआ
धरती से अंबर एक हुआ
वैशाख शुक्ल दशमी शुभ दिन
आचार्य पदम अभिषेक हुआ
तन विष विकार विच्छिन्न हुए
अंतर्मन के पथ भिन्न हुए
अंगारों के तपते पथ पर
अंकित पावन पद चिह्न हुए
चैतन्य ज्ञान से दिया अभय
तुमसे ज्योतित है नील निलय
हे संत प्रथा के अधिनायक
हे ज्योतिष्मान तुम्हारी जय

निज आभा से आलोकित कर
नूतन आकाश बना डाला।
दो कदम चले तो कदमों से
गर्वित इतिहास बना डाला।

हे कुरुक्षेत्र के पारायण
तुम दीन-दुखी के नारायण
हे महाप्रज्ञ के रचित ग्रंथ
तुम मोक्ष द्वार के मुदित पंथ
जिन संस्कारों के शिखर स्तूप
साक्षात संत भवंत रूप
ध्रुव संयनिष्ठ प्रतिमान नव्य
तुम भरत भूमि के भाल भव्य
कर लिया बिछौना धरती पर
ऊपर से ओढ लिया अंबर
दुनिया को दर्श रहे बाहर
पर वास किया खुद के भीतर
परमार्थ वृत्ति के क्षीण-मंथन
करुणा कानन के सुरभि सुमन
इस धरती के अनमोल रतन
तब चरणों में शत कोटि नमन।

शुचि शुभ्र चदरिया धारणकर
जीवन संन्यास बना डाला।
दो कदम चले तो कदमों से
गर्वित इतिहास बना डाला।

हिंसा का आश्रय धर्म नहीं
मानव ने जाना मर्म नहीं
हे पंच महाव्रतवीर पथिक
भव-भोग श्रमण का कर्म नहीं
इस दिव्य वृत्ति का गान सुनो
जैनागम मर्म महान सुनो
श्री महाश्रमण विदु-वाणी में
मानव का धर्म-विधान सुनो
मृदुवाणी अमृत घोल रही
प्रज्ञा मानो मुख बोल रही
मन वीणा को झंकृत करने
अवचेतन के पट खोल रही
है प्राण तत्त्व साकार यही
मानस जीवन आधार यही
स्थितप्रज्ञ विदेह तपस्वी जो
कलि में ईश्वर अवतार यही।

सद्गुरु चरण के चंदन से
निज मस्तक खास बना डाला।
दो कदम चले तो कदमों से
गर्वित इतिहास बना डाला।

आचार्यश्री महाश्रमण जी का १३वाँ पट्टोत्सव समारोह

पेरम्बूर, चेन्नई।

मुनि सुधाकर कुमार जी एवं साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में एवं तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में आचार्यश्री महाश्रमण जी का १३वाँ पट्टोत्सव लक्ष्मी महल में मनाया गया। मुनि सुधाकर जी ने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण जी का जीवन अनेक गुणों का समवाय है। पाँच एच को व्याख्यायित करते हुए कहा–उनका अनुत्तर संयम उनकी स्वस्थता की पहचान है। वे हेल्दी मैन हैं। उनका जीवन हम्बल उत्कृष्टता से भरपूर है। इस विनम्रता के गुण ने उन्हें सफलता का शिखर प्रदान किया। हैप्पीनेस का गुण सदा वर्धमान होते हम देख रहे हैं। बदन की प्रसन्नता हर दर्शक के आस्था का केंद्र है। होनेस्टी यानी ईमानदारी, मूल्यों को जीना उन्हें प्रिय है। उनकी सोच आसमा से भी ऊँची है। हाई थिंकिंग में गहरा विश्वास है, जिसके कारण मानव मात्र के लिए महापथ दर्शक बने हुए हैं।

साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण उदितोदित व्यक्तित्व के धनी हैं। उनका सौभाग्य निरंतर प्रवर्धमान है। वह आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञजी के अति विश्वासपात्र रहे हैं। आज पट्टोत्सव के अवसर पर कीर्तिमान पुरुष और इतिहास सर्जक के रूप में हम उनकी अभ्यर्थना कर रहे हैं।

महिला मंडल के मंगलाचरण से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। मुनि नरेश कुमार जी ने भावपूर्ण संगान के साथ गुरुदेव को वर्धापित किया। साध्वी शौर्यप्रभाजी एवं साध्वी राजुलप्रभाजी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। साध्वी चैतन्यप्रभाजी ने अंग्रेजी एवं साध्वी सिद्धियशाजी ने हिंदी भाषा में काव्यांजलि प्रस्तुत की। साध्वी मंगलप्रज्ञा जी द्वारा रचित गीत को स्वर दिया गायक हेमंत डूंगरवाल और संदीप पूनमिया ने। तेरापंथ सभा अध्यक्ष प्यारेलाल पितलिया, महिला मंडल अध्यक्षा पुष्पा हिरण, साहूकारपेट तेरापंथ ट्रस्ट के प्रधान न्यासी एवं महासभा कार्यकारिणी सदस्य विमल चिप्पड़, तेयुप अध्यक्ष मुकेश नवलखा, टीपीएफ अध्यक्ष राकेश खटेड़ ने विचार व्यक्त किए।

कन्या मंडल ने गीत की प्रस्तुति दी। साध्वीवृंद ने सामुहिक संगीत का संगान किया। आभार ज्ञापन सभा के मंत्री गजेंद्र खांटेड़ ने किया। कार्यक्रम के संयोजक अशोक खतंग ने संचालन किया।

टीपीएफ द्वारा 'माँ तंदुरुस्त, परिवार दुरस्त' के अंतर्गत अनुभवी डॉक्टरों द्वारा माताओं के लिए उपयोगी सलाह कैंप रखा गया एवं निःशुल्क हिमोग्लोबिन, शुगर और डायनेस्टिक टेस्ट किए गए।

✦ अपना घर भरने के लिए व्यापार के माध्यम से लोभवश किसी के साथ धोखा करना गलत होता है।
—आचार्यश्री महाश्रमण

नवम साध्वीप्रमुखाश्री के चयन दिवस पर विशेष

अर्हम

● साध्वी प्रतिभाश्री ●

मनोनयन साध्वीप्रमुखा का बना संघ खुशहाल।
गण प्रांगण में आज सुरभित शीतल चले बहार।
पौर-पौर में पुलकन, स्वर्णिम भोर नूतन।।

युगप्रधान महाश्रमण जी नव इतिहास रचाया।
साध्वीप्रमुखा नवमी गण प्रकाश छाया।
दशों दिशाएँ मोद मनाएँ स्वागत में नव थाल सजाएँ
गाएँ मंगलाचार।।

साधना विशिष्ट तेरी, प्रेरणामय जीवन।
गुण सुमनो से महका तेरापंथ उपवन
महाप्रज्ञ की अनुपम कृति का अभिनंदन बार हजार।।

समणी से श्रमणी महाहीरकमणी सोमार,
साध्वी शिरोमणी पा भाग्य सराएँ।
अर्चा की नव लाए ऋचाएँ, संघ मणी को आज बधाएँ।।
खुशियाँ बेअंदाज।।

भैक्षव गण की महिमा निराली,
महाश्रमण गुरुवर के साध्वी गण आभारी।
मंगलमय हो सदा संघ में जय विजय हो सदा संघ में।
महाश्रमण रिछपाल।।

लय : स्वर्ग से सुंदर---

काव्य

● साध्वी नीतिप्रभा ●

इस अभ्यर्थना के सुखद पलों में
कहाँ तुम्हें बिठाऊँ।।
कोई घर नहीं, दरबार नहीं
कहाँ तुम्हें सजाऊँ।। इस----

हाथ जोड़ कर अर्ज करूँ में
चरण धरो इस मन मंदिर में
यहीं तुम्हें बधाऊँ।। इस----
अखंड अंक जो नौ का पायें
उसकी भाग्य लता लहरायें
ऐसी साध्वीप्रमुखा को श्रद्धा सुमन चढ़ाऊँ।। इस----

दृश्य एक अनूठा देखा
गुरु ने जो खिंची थी रेखा
देख उसे, पुलकित प्रफुल्लित मन बन जाऊँ।। इस---

वंदन करूँ अभिनंदन तेरा
इतिहास बनेगा नव नवेला
भावों के सुनहरें गीत गढ़ पाऊँ।। इस---

युगों-युगों तक करो शासना
चतुर्विध संघ की है वर्द्धापना
महाप्रज्ञ की कृति को भेंट चढ़ाने
शब्दों के पुष्प कहाँ से लाऊँ।। इस---

मंगल वर्धापना गीत

● साध्वी संघप्रभा ●
● साध्वी प्रांशुप्रभा ●

सुगुरु का गौरव गाते हैं।
नव नियुक्त साध्वीप्रमुखा को आज बधाते हैं।। ध्रुव।।

मिला भाग्य से भैक्षव शासन महाश्रमण से शास्ता।
जिनकी सूझबूझ को अर्पित है जन-जन की आस्था।
रचा नया इतिहास देव ने, शीष झुकाते हैं।।१।।

तुलसी महाप्रज्ञ की तुमने कृपा अनूठी पाई।
महाश्रमण ने प्रमुखा पद पर कर नियुक्ति दिखलाई।
शासन माँ की सुखद शासना स्मृति में लाते हैं।।२।।

'विश्रुतविभा' नाम है तेरा विश्रुत हो यश गाथा।
कर इंगित आराधन गुरुओं को पहुँचाओ साता।
श्रमणीगण की शान बढ़ाओ, भाव सजाते हैं।।३।।

चित्त समाधि मिले हम सबको यही भावना भाएँ।
सतिशेखरे! युग-युग तेरा शुभ पथदर्शन पाएँ।
तुम जैसी साध्वी प्रमुखा पा मोद मनाते हैं।।४।।
सफल सुफल पल-पल हो, मंगल दीप जलाते हैं।।

लय : सुगुरु को वंदन----

अर्हम

● साध्वी उज्ज्वलप्रभा ●

साध्वीप्रमुखा मनोनयन, कर दीन्हो गुरु महाश्रमण।
मन हरसै हो म्हारां मन हरसै, आज बधावां सा।।

भैक्षव गण में अभिनव पुलकन, श्रमणीगण करता वर्धापन।
रंग बरसै हो संघ में रंग बरसै, आज बधावां सा।।

नयो नजारो नई तरंगा, मनोनयन री नई उमंगा।
खुशियाँ नभ फरसै हो आज, नभ फरसै, आज बधावां सा।।

अभिनंदन अभिवंदन करतां श्रमणी गा रा भाग्य है खिलता।
इमरत बरसै हो आज इमरत बरसै, आज बधावां सा।।

साध्वीप्रमुखा पद ओ दीपै, नौवीं साध्वीप्रमुखा हद ओपै।
दिल, सरसै हो म्हारां दिल सरसै, आज बधावां सा।।

रहो निरामय सतीशेखरा, शुभ कामना म्हें आज करां।
हियो हरसै हो म्हारो हियो हरसै, आज बधावां सा।।

जुग-जुग जीओ साध्वीप्रमुखा, जग में विश्रुत विश्रुत विभा।
दर्शन नै मन तरसै हो म्हारो मन तरसै, आज बधावां सा।।

✦ *निष्ठा क्रिया की आत्मा है। उसके बिना महान् कार्य नहीं किया जा सकता।*
– आचार्यश्री महाश्रमण

अर्हम्

● साध्वी रतनश्री, श्रीडूंगरगढ़ ●

महामनस्विनी महायशस्विनी महातेजस्विनी नवनिर्वाचित तेरापंथ धर्मसंघ की नवम साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा जी के पावन पादारविंदों में साध्वी रतनश्री, साध्वी सुव्रता, साध्वी सुमनप्रभा, साध्वी कार्तिकप्रभा एवं साध्वी चिंतनप्रभा की सहस्रशः सादर सविधि सभक्ति प्रणति एवं अनंतशः बधाई।

सतीशेखरे! आचार्यप्रवर के पावन दीक्षा दिवस समारोह के स्वर्णिम अवसर पर साध्वीप्रमुखा की नियुक्ति की घोषणा हमने सुनी तो हमारे हृदय सिंधु में हर्ष और उल्लास की उत्ताल तरंगे उछलने लगी। भाव-विभोर होकर अतीत की अनेक स्मृति भविष्य की सुनहली कल्पनाएँ हमारे नयन पटल उभरने लगी।

साध्वी शिरोमणे! आपने विकास के एकेक सोपानों पर आरोहण करते-करते आज सर्वोच्च शिखर को छू लिया है। दो महीनों से रिक्त साध्वीप्रमुखा के गरिमामय स्थान को पुनः अभिमंडित कर दिया है।

साध्वी संरक्षिके! आप आचार्यप्रवर द्वारा प्राप्त पुण्य आशीर्वाद से अपने दायित्व का कुशलतापूर्वक निर्वाह करती रहें। साध्वी समाज को मातृहृदया बनकर ममता प्रदान करती रहें। तेरापंथ धर्मसंघ की गरिमा में चार चाँद लगाती रहें। निरामय बनकर संयम-साधना में बढ़ती रहें।

इन्हीं ढेर सारी शुभाशंसाओं, शुभकामनाओं एवं मंगलभावनाओं के साथ–

आपकी विनीता साध्वी रतनश्री, श्रीडूंगरगढ़

आज धरा खुशहाल

● साध्वी निर्वाणश्री ●

आज धरा खुशहाल गगन यह गाए मंजुल गीत।
अभिनंदन साध्वीप्रमुखा का उत्कंठित है मन का मीत।।

दीक्षा दिन गुरुवर का पावन मंगलमय उपहार मिला।
मनोनयन का वर है सुंदर गण उपवन जो खिला-खिला।
मनहारी वह दृश्य निहारा बन पाए हम परम पुनीत।।

बचपन से आत्मानुशासी गुरुचरणों में सहज समर्पण।
ज्ञान-ध्यान की निर्मल धारा तप का तुम करती हो तर्पण।
शिखरों की है यात्रा प्रतिपल जुड़ी रही अंतर में प्रीत।।

गण की वेदी पर मुखरित हो गणनायक का जो विश्वास।
दीपशिखे! गण की एक-एक साध्वी में भर दें नया उजास।
दो-दो साध्वीप्रमुखाओं से संवलित जीवन पुण्यप्रणीत।।

सेवा कार्य

टी-दासरहल्ली।

अभातेयुप निर्देशित त्रिआयामों में सेवा के क्षेत्र में तेयुप द्वारा अन्नदान का कार्यक्रम किया। रमेश गीता बाबेल के सुपुत्र ऋषभ बाबेल के जन्मदिन के उपलक्ष्य पर अन्नदान किया गया। सर्वप्रथम सामुहिक नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत की गई। तत्पश्चात तेयुप अध्यक्ष कुशल बाबेल ने जन्मदिन पर बधाई व शुभकामनाएँ प्रेषित की।

इस अवसर पर तेरापंथ ट्रस्ट निवर्तमान अध्यक्ष लादूलाल बाबेल, मंत्री कन्हैयालाल गांधी, रमेश बाबेल, तेयुप निवर्तमान अध्यक्ष मुकेश चावत, अध्यक्ष कुशल बाबेल, सहमंत्री प्रवीण बोहरा, विनोद बोहरा, किशोर मंडल सह-संयोजक शुभम बाबेल उपस्थित रहे।

आचार्यश्री महाश्रमण जी के षष्टीपूर्ति समारोह के आयोजन

आचार्यश्री महाश्रमण विश्व की महान विभूति हैं

नोखा।

आचार्यश्री महाश्रमण जी का जीवन परिश्रमी, संयमी, संकल्पयुक्त योग साधना का अद्भुत जीवन है। सम-समता युक्त, श्रम-श्रमशील श्रमिक का जीवन, षम-शांत चित्त, कषाय विजेता, परोपकारी विलक्षण जीवन रहा है। अहिंसा यात्रा संपूर्ण जगत की महान देन रही है। यह उद्गार शासन गौरव साध्वी राजीमती जी ने नोखा में युगप्रधान व षष्टीपूर्ति समारोह में व्यक्त किए।

मंगलाचरण साध्वी पुलकितयशाजी एवं साध्वी कुसुमप्रभाजी ने नेमानंदन स्तुति से किया। महिला मंडल की बहनों ने सुमधुर गीतिका का स्वर दिया।

साध्वी पल्लवप्रभाजी, साध्वी प्रभातप्रभाजी, कनक बुच्चा, सुमन मरोठी, इंदरचंद बैद, डॉ० प्रेमसुख मरोठी, सभामंत्री लाभचंद छाजेड़, तेरापंथ टाइम्स के संपादक दिनेश मरोठी ने अपने भाव कविता-मुक्तक द्वारा व्यक्त किए।

बचपन से अब तक साठ वर्ष की वैराग्य, दीक्षा, युवाचार्य, मुदित से महाश्रमण तक की जीवन-झाँकी कन्या मंडल व ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा भावपूर्ण प्रस्तुति मनमोहक रही। कार्यक्रम का संचालन साध्वी पुलकितयशा जी ने किया।

युगदृष्टा है आचार्यश्री महाश्रमणजी

विशाखापट्टनम्।

भैरव टॉवर के हॉल में मुनि दीप कुमार जी के सान्निध्य में आचार्यश्री महाश्रमण जी का षष्ठिपूर्ति, युगप्रधान आचार्य वर्धापना एवं दीक्षा दिवस समारोह का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद द्वारा किया गया।

मुनि दीप कुमार जी ने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण जी ने जीवन के सातवें दशक में प्रवेश किया है। इस उम्र में भी युवा से भी अधिक सक्षम हैं। अद्भुत शक्ति और तेजस्विता लिए हुए हैं। वे अवस्था से प्रभावित नहीं हैं। लगता है आचार्यश्री चिरयुवा हैं। स्फूर्ति, प्रफुल्लता आचार्यश्री की अद्भुत है। कठोर पुरुषार्थी हैं।

बालमुनि काव्य कुमार जी ने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण जी मेरे दीक्षा गुरु हैं। वे करुणा सागर हैं। उनके बताए मार्गदर्शन के अनुसार हमें आगे बढ़ना है।

कार्यक्रम में मंगलाचरण महिला मंडल की बहनों ने किया। तेयुप अध्यक्ष ऋषभ सुराणा, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा वंदना विनायकिया ने विचार व्यक्त किए। ज्ञानशाला के बच्चे कुणाल नाहटा एवं गर्व बरड़िया ने संवाद प्रस्तुत किया। प्रज्ञा जैन ने गीत का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन विमल कुंडलिया ने किया।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ महाप्रयाण दिवस के आयोजन

आचार्य महाप्रज्ञ महाप्रयाण दिवस

जसोल।

तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में मूर्तिपूजक साध्वी संजय शीलाजी के सान्निध्य में महाप्रज्ञ महाप्रयाण दिवस मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत तेममं द्वारा 'महाप्रज्ञ अष्टकम्' से की गई। वरिष्ठ श्रावक शंकरलाल ढेलड़िया, महासभा के पूर्व उपाध्यक्ष गौतम सालेचा, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष सोहनीदेवी सालेचा सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति ने भाषण, गीत, कविता द्वारा अपने भावों की श्रद्धांजलि दी।

साध्वी सुयशा ने आचार्य पद की प्रतिष्ठा, उनके गुण, कर्तव्य के बारे में प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए कहा कि महापुरुष के गुणगान से नहीं बल्कि उनके गुणों को अपने जीवन में व्यवहार में धारकर, अपनाकर ही सच्ची श्रद्धांजलि दे सकें तो सार्थक व सच्ची श्रद्धांजलि है। आज के दिन आयंबिल, उपवास, एकासन से अनेक भाई-बहनों ने अपने आराध्य को भावांजलि अर्पित की। कार्यक्रम का संचालन व आभार ज्ञापन सभा मंत्री माणकचंद संखलेचा ने किया।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ की पुण्यतिथि

कोल्हापुर।

तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में साध्वी प्रमिलाकुमारी जी के सान्निध्य में तेरापंथ धर्मसंघ के १०वें अधिशास्ता प्रेक्षाप्रणेता आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी की १२वीं पुण्यतिथि के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन हुआ। साध्वीश्री द्वारा मंगल मंत्रोच्चार के पश्चात कार्यक्रम निर्विघ्नता के लिए श्वेता पगारिया ने मंगलाचरण किया, जिसके बाद पश्चिम महाराष्ट्र के अध्यक्ष व कोल्हापुर सभा अध्यक्ष उत्तम पगारिया ने सभी आगंतुकों का स्वागत करते हुए आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के प्रति अपनी विनयांजलि प्रस्तुत की।

इस अवसर पर इचलकरंजी सभा अध्यक्ष महावीर आंचलिया, मंत्री पुष्पराज सकलेचा, महिला मंडल अध्यक्षा जयश्री जोगड़, सविता रुणवाल, ज्योति रुणवाल, रश्मि दुगड़ जयंती सुराणा, विजया डोसी ने भाषा व गीतिका के माध्यम से अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी।

साध्वी आस्थाश्री जी एवं साध्वी विज्ञप्रभाजी ने भी महाप्रज्ञ से साक्षात्कार लघु संवाद कार्यक्रम के माध्यम से अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। साध्वी आस्थाश्री जी ने स्वरचित कविता से अपने आराध्य के प्रति श्रद्धा समर्पित की।

साध्वी प्रमिला कुमारी जी ने कहा कि एक छोटे से गाँव में जन्म लेने वाले साधारण बालक नत्थू से नत्थू से महान आचार्य महाप्रज्ञ बनने की कहानी, अखंड समर्पण की कहानी है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का व्यक्तित्व पत्ते, फूल व फल प्रदान करने वाले वृक्ष के समान उत्तम था, जो राहगीर को शीतल छाया के साथ-साथ सुरभित हवा व फल भी देता है। आचार्यप्रवर ने जीवन-विज्ञान, प्रेक्षाध्यान आदि अनेकानेक अवदान दिए। कार्यक्रम के अंत में प्रमोद बुच्चा ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी विज्ञप्रभाजी ने किया।

यादें... शासनमाता की - (८)

● साध्वी स्वस्तिक प्रभा ●

१३ मार्च, २०२२, गत दिनों की भाँति आज भी प्रातः लगभग ७:०० बजे साध्वियों के प्रवास-स्थल पर परम पूज्य आचार्यप्रवर पधार गए। वंदना के पश्चात् साध्वीप्रमुखाजी के कक्ष में करीब १८ मिनिट मौन, ध्यान किया, फिर वीरत्थुई का पाठ शुरू किया।

आचार्यप्रवर : कैसे हैं? मोटामोटी ठीक है?

साध्वीप्रमुखाश्री : कृपा–शुभदृष्टि करवाई।

लगभग ६:१० पर परमपूज्यश्री का पुनरागमन हुआ।

साध्वीप्रमुखाश्री : गुरुदेव तुलसी ने फरमाया था कि कहीं मेरी डायरी में लिखा हुआ था कि महाश्रमण में इतनी स्फूर्ति है।

आचार्यप्रवर : अच्छा।

साध्वीप्रमुखाश्री : जानकारी करके निवेदन करने का भाव है।

आचार्यप्रवर : कुछ स्वाध्याय करवाएँ?

परमपूज्य जयाचार्य द्वारा रचित आराधना की दूसरी गीतिका के संगान को पूरा करके।

आचार्यप्रवर : मैंने आगम के पाठ से भी एक बार आपको आराधना-आलोचना करवा दी थी।

साध्वीप्रमुखाश्री : माइतपणा करवाया, शुभदृष्टि करवाई। आचार्यश्री को अब प्रवचन में पधारना है।

मध्याह्न में ३:३० पर आचार्यप्रवर पुनः साध्वीप्रमुखाजी के पास पधारे।

साध्वी सुमतिप्रभाजी : कुछ देर पहले मैंने निवेदन किया कि आप कुछ नहीं फरमाते, सारी बातें समाप्त हो गई तब साध्वीप्रमुखाश्री ने फरमाया–

सव्वे नरा नियट्टंति'

आचार्यप्रवर : श्वास लेने में तकलीफ हो रही है क्या?

साध्वी सुमतिप्रभाजी : थोड़ी।

आचार्यप्रवर : इसमें राहत कैसे मिले?

साध्वीप्रमुखाश्री : गुरुदेव बहुत राहत दिलवा रहे हैं। मेरे लिखी हुई होगी तब मिलेगी ना।

आचार्यप्रवर : Nimbeliser लेने से कुछ हो नहीं तो रात-भर ऐसे चलने से तकलीफ कितनी होगी?

साध्वीप्रमुखाश्री : कृपा करवाई। गोचरी का समय हो गया।

आचार्यप्रवर : अभी टाइम है। जितना मन लगे, उतनी देर णमो सिद्धाणं का जाप चलता रहे।

सायंकाल

आचार्यप्रवर : महप्पसाया इसिणो हवंति–साधु गुस्से से मुक्त रह सके तो अच्छा, अहंकार खत्म करने की चेष्टा रहे, आदमी माया, छल-कपट आदि नहीं करे, बाह्य आकर्षण ज्यादा नहीं करे तो लोभ से भी वशीभूत न हो। ये क्षीण होते ही आर्जव, मार्दव, क्षांति, मुक्ति बढ़िया हो जाते हैं।

दीक्षा लेते ही १८ पाप त्यक्त हो जाते हैं। जो आत्मा को कलुषित करने वाले हैं। तिर्यंच योनि के कई जीव भी जिन्हें जाति स्मृति ज्ञान हो गया, उन्होंने भी १८ पापों को छोड़ दिया जैसे चंडकौशिक। गृहस्थ भी १८ पाप छोड़ते ही कल्याण के रास्ते पर आ जाता है। साधु के तो १८ पाप का त्याग है ही किंतु छद्मस्थता के कारण कभी हो जाए तो उनको वोसिरा देने से शुद्धि और हो जाती है।

ऋजुता और सच्चाई दोनों का संबंध है। कपट हो तो निर्मलता नहीं रहती। झूठ और कपट दोनों जुड़े हुए हैं। जीवन में आर्जव भाव हो तो जीवन खुली पुस्तक की तरह रहता है। मुँह से गलत बात नहीं बोलता।

'बहुं सुणेइ कण्णेहिं, बहुं अच्छीहिं पेच्छई, न य दिट्ठं---' हर बात बताने की नहीं, भीतर में भी रखनी चाहिए, किंतु कपट भावना से बात छिपाएँ तो अच्छा नहीं। गलती की ओर नहीं बोले तो गलत। बात छिपाएँ नहीं, आलोयणा गुरु दे तो ऋजुता से अपनी बात रख दे।

आगम में १८ पाप से दूर रहने की बात कही गई है। आदमी के तीन जन्मों का संबंध अधिक रह सकता है। यहाँ से आगे जाए तो अगला भव भी अच्छा-बढ़िया हो, जैसे राजा प्रदेशी आस्तिक बना फिर देव बना और आगे मोक्ष तैयार। तामली तापस देवलोक में और आगे फिर मोक्ष। किसी को देवगति छोटी (अल्पकालीन) और आगे मोक्ष मिले। बड़ी देवगति वाला भी सुखी रहता है।

इस प्रकार साध्वीप्रमुखाश्री को समाधि-शुद्धि का पाथेय प्रदान कर आचार्यप्रवर प्रवास-स्थल पर पधार गए।

(क्रमशः)

✦ *अच्छा कार्यकर्ता वही हो सकता है जो अनुशासनप्रिय होता है और स्वयं पर होने वाले अनुशासन को सहन कर सकता है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

दुःख का ही रूप है चिंता : आचार्यश्री महाश्रमण

तेरापंथ भवन, सरदारशहर, १४ मई, २०२२

नंदनवन तेरापंथ के गणमाली आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पावन पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि आगम में एक बात आती है कि भगवान महावीर ने साधुओं से प्रश्न किया कि साधुओ! प्राणियों को किस चीज का भय लगता है। उसका उत्तर देते हुए भगवान ने ही फरमाया कि प्राणियों को भय दुःख से होता है।

प्रश्न है कि दुःख से छुटकारा कैसे मिले? दुःख मुक्ति कैसे मिले? गृहस्थों को बाह्य दुःख होते हैं, तो बाह्य संसाधनों से दुःख दूर करने का प्रयास कर लेते हैं। दुःख के प्रतिकूल व्यवस्था कर ली तो दुःख दूर हो सकता है। भीतर का दुःख बाह्य संसाधनों से दूर नहीं होते, इसलिए दुःख के दो प्रकार हो जाते हैं—आंतरिक दुःख और बाह्य दुःख।

आंतरिक दुःख जो मानसिक, भावनात्मक होता है वह दूर कैसे हो। दो शब्द हैं—सुविधा और शांति। सुविधा से बाह्य दुःख दूर हो सकता है, पर शांति मिलना मुश्किल है। संसाधनों से सुविधा मिल सकती है, साधना से शांति मिल सकती है। दुःख मुक्ति का साधन है—अपने आपका अभिनिग्रह-संयम करो।

अपने आप निग्रह करने के लिए गुस्से को कंट्रोल में रखें तो शांति हो सकती है। अपना संयम, अपना अनुशासन अपने पर है, फिर दूसरा हमें मानसिक रूप में दुःखी नहीं बना सकता। आत्म निग्रह से दुःखमुक्ति हो सकती है। 'चिंता नहीं, चिंतन करो'। यह सूक्त बड़ा सुंदर है। चिंता दुःख का ही रूप है। चिंतन करें कि किस स्थिति में क्या करें? हर स्थिति में चिंता न करें।

आदमी के मन में संतोष है, तो बड़ी शांति रहती है। साधु तो राजा की तरह सुखी होता है। साधु के तो धरती शैय्या है। साधु की भुजा ही सिराणा है। चंद्रमा की चांदनी ही प्रकाश है। साधु तो राजा से भी बड़ा होता है। राजा आदि बड़े-बड़े लोग साधु को प्रणाम करते हैं। साधु देवों के लिए पूजनीय-वंदनीय है। कारण साधु में संयम है, त्याग है। शास्त्रकार ने कहा है कि अपने आपका निग्रह करो। संतोष नहीं है, तो आदमी दुःखी हो सकता है।

स्थानीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्त्वावधान में निवासी-प्रवासी युवकों का सम्मेलन पुनरागमन पूज्यवर की सन्निधि व मंगलपाठ से शुरू हुआ। मनीष दफ्तरी ने इस सम्मेलन की जानकारी दी। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में साध्वी वीरप्रभाजी, साध्वी साधनाश्री जी, साध्वी इंदुयशाजी, साध्वी गंभीरप्रभाजी, साध्वी रोहितयशाजी, साध्वी कल्पमालाजी, साध्वी संकल्पश्रीजी, साध्वी भावितप्रभाजी, साध्वी गुप्तिप्रभाजी, साध्वी प्रशांतयशाजी, साध्वी कीर्तिप्रभाजी, साध्वी मयंकप्रभाजी, साध्वी मलययशाजी, साध्वी स्वस्तिकप्रभाजी, साध्वी मीमांसाप्रभाजी, समणी सत्यप्रज्ञा जी, समणी स्वर्णप्रज्ञाजी, समणी रोहिणीप्रज्ञाजी, समणी मुकुलप्रज्ञा जी आदि ने अपनी भावनाएँ व्यक्त की।

अभिनंदन नाहटा, निशा सेठिया, सुमन दुगड़, शांति देवी चिंडालिया, नेहा नखत, तेजकरण चोरड़िया आदि ने अपनी अभिवंदना प्रस्तुत की।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमारजी ने बताया कि जो गुरु को छोड़ देता है, वो साधना नहीं कर सकता।

चारित्रात्माओं के लिए पथदर्शक आगम है दशवेंआलियं : आचार्यश्री महाश्रमण

तेरापंथ भवन, सरदारशहर, १३ मई, २०२२

संयम साधना के शिखर आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि दसवेंआलियं एक ऐसा आगम है, जो चारित्रात्माओं के लिए बहुत शिक्षाप्रद है। पथदर्शक है और नियम की भी जानकारी देने वाला है।

अभी मैंने नवदीक्षित साध्वी को छेदोपस्थापनीय चारित्र ग्रहण करवाया। वो दसवेंआलियं आगम के आधार से करवाया। इसके चौथे अध्ययन में पाँच महाव्रतों और छठे रात्रि भोजन विरमण व्रत के त्याग का क्रम आर्ष वाणी में आया है, उसके द्वारा ही मैंने नवदीक्षित साध्वी को प्रत्याख्यान करवाया। साधुचर्या की मौलिक जानकारी दसवेंआलियं से प्राप्त हो सकती है।

दसवेंआलियं के प्रथम श्लोक में तो अतिसूक्ष्म में बताया गया है कि धर्म क्या है? अहिंसा, संयम, तप धर्म है। इसके पाँचवें अध्ययन में गोचरी-भिक्षा-आहार संबंधी चर्या की बात विस्तार में बताई गई है। सातवाँ अध्ययन भाषा की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। विनय कैसे रखना, गुरु के प्रति कैसे रखना, विनीत को संपत्ति, अविनीत को विपत्ति मिलती है आदि बातें इसके नौवें अध्ययन में बताई गई हैं।

भिक्षु कौन होता है, भिक्षु के क्या लक्षण हैं, यह बात दसवें अध्ययन में बताई गई है। दो चूलिकाएँ भी हैं। प्रथम चूलिका में बताया गया है कि साधु का मन अगर घर जाने का हो जाए, साधुपन छोड़ने का हो जाए तो क्या चिंतन करना चाहिए? अठारह बातें बताई गई हैं। उन पर विचार करें तो गिरता मन संभल सकता है। दूसरी चूलिका में अनुश्रोत की बात बताई गई है।

दसवेंआलियं का तो चारित्रात्माओं को बार-बार स्वाध्याय करते रहना चाहिए। समणियाँ भी निरंतर स्वाध्याय करती रहें। शास्त्रों की सारभूत बात दसवेंआलियं में आई हुई है। आगम हमारे लिए खुराक है। नवदीक्षित साध्वी भी इनका स्वाध्याय करती रहें। इनके चित्त समाधि रहे। जीवन में विकास करना चाहिए। सेवा की भावना रहे।

बड़ी दीक्षा से पहले साध्वी नमनप्रभाजी ने अपने सात दिन के संस्मरण बताए। बड़ी दीक्षा के बाद उन्होंने सभी संतों को वंदना की। संतों की ओर से मुनि धर्मरुचिजी ने उनके प्रति मंगलभावना प्रेषित की।

साध्वी गुणमालाजी की स्मृति सभा

पूज्यप्रवर की सन्निधि में साध्वी गुणमाला जी जो ७ मई को ११ मिनट के तिविहार संथारे में प्रयाण कर गई थी की स्मृति सभा का आयोजन किया गया। परम पावन ने उनका परिचय बताया। उनकी स्मृति में चार लोगस्स का ध्यान करवाया। महामनीषी ने उनकी आत्मा की उत्तरोत्तर प्रगति करने हेतु परम लक्ष्य को प्राप्त करे, ऐसी मंगलभावना करते हुए भावांजलि अभिव्यक्त की।

मुख्य मुनिप्रवर एवं मुख्य नियोजिका जी ने भी अपनी मंगलभावना रूप में भावांजलि दी। साध्वी निर्मलयशाजी ने भी भावांजलि व्यक्त की।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में मुनि ऋषिकुमार जी व मुनि रत्नेश कुमार जी, साध्वी स्वस्तिकप्रभाजी, साध्वी मलयशाजी, साध्वी सिद्धप्रभाजी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। समणी सत्यप्रज्ञा जी, समणी स्वरप्रज्ञा जी, समणी रोहिणीप्रज्ञाजी, समणी मुकुलप्रज्ञाजी ने भी अपनी अभिवंदना श्रीचरणों में व्यक्त की।

सरदारशहर के मित्तल परिवार से मित्तल चेरीटीज द्वारा पूज्यप्रवर को अभिनंदन पत्र समर्पित किया गया। अभिनंदन पत्र का वाचन डॉ० अमित ने किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

आज के दिन मेरे लिए सोने का सूरज उगा था...

(पृष्ठ १५ का शेष)

मैंने चिंतन किया है कि मैं इस स्थान को लंबे काल तक रिक्त न रखूँ। मैं साध्वियों से परिचित भी हूँ। मैंने ध्यान भी दिया है। मैं मेरा चिंतन आपके सामने रखना चाहता हूँ। नियुक्ति पत्र का वाचन करते हुए साध्वी विश्रुतविभाजी को नवमी साध्वीप्रमुखा के रूप में स्थापित किया। और नियुक्ति पत्र नव मनोनीत साध्वीप्रमुखा जी को समर्पित किया।

पूज्यप्रवर ने नवनियुक्त साध्वीप्रमुखाजी को नई पछेवड़ी साध्वीवर्याजी से ओढ़ाई। अपना रजोहरण व प्रमार्जनी साध्वीप्रमुखाजी को प्रदान कराया। औज आहार के रूप में गुड़ चंवलेड़ी प्रदान करवाई और मुख्य नियोजिका से साध्वीप्रमुखा के रूप में स्थापित किया।

नव मनोनीत साध्वीप्रमुखाजी के प्रति अपने मंगल उद्गार व्यक्त करते हुए पूज्यप्रवर ने फरमाया कि साध्वीप्रमुखा का स्वास्थ्य खूब अच्छा रहे, खूब अच्छे ढंग से लंबे काल तक साध्वी समाज व अन्य सेवाएँ करती रहें। साध्वी समाज भी साध्वीप्रमुखाजी के निर्देशन में अपनी साधना करते रहें, निर्देश का पालन करते रहें। उन्हें सम्मान दे, उस पर गौर करें। चतुर्विध धर्मसंघ ने खड़े होकर नवनियुक्त साध्वीप्रमुखा का अभिवंदन किया।

गुरु आज्ञा के प्रति समर्पित रहकर धर्मसंघ के विकास में योगभूत बनूँ - साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी

आज के इस मंगल अवसर पर अपने मन के भाव व्यक्त करते हुए नवनियुक्त साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी ने कहा कि जीवन में कुछ क्षण ऐसे आते हैं, तब वाणी मौन होना चाहती है। भाव उभरते रहते हैं। मैं अपने शब्दों को एकत्रित करके बोल रही हूँ कि तेरापंथ धर्मसंघ एक नेतृत्व वाला धर्मसंघ है। हमारी चिंता की सारी चादर गुरु के कंधों पर रहती है। गुरु हमारे लिए समाधायक होते हैं।

इतिहास साक्षी है कि गुरु ने जब जो भार सौंपा स्वयं गुरु ही शक्ति संप्रेषित करते रहते हैं। हर शिष्य के लिए गुरु का आशीर्वाद आधार बिंदु बनता है। आचार्यवर आपने मुझे एक दायित्व सौंपा है। उस दायित्व का मैं कैसे निर्वहन कर पाऊँगी, मैं नहीं समझ पा रही। मुझे वही आशीर्वाद, वही कृपा, वही विश्वास मिलेगा। मैं उसी के आधार पर कार्य करूँगी और आगे बढ़ती रहूँगी।

गुरुदेव तुलसी ने मुझे समणी दीक्षा एवं संयम रत्न प्रदान किया था। आचार्य महाप्रज्ञ जी ने मुझे आगे बढ़ने का अवसर दिया। वर्तमान में आपश्री की निश्रा में मैं और विकास कर रही हूँ। आचार्यप्रवर! आज आपका दीक्षा दिवस है। तेरापंथ में संन्यास की परंपरा रही है। लोगों में आपके प्रति आकर्षण बढ़ रहा है, वह आपके संन्यास व तेज का ही प्रभाव है।

मुझे आज साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी की स्मृति आ रही है। मैंने उनको नजदीकी से देखा है। वे वही कार्य करती जो गुरु का इंगित होता। मैं भी अपने प्रति मंगलकामना करती हूँ कि गुरुदेव मुझे आपका जो भी निर्देश-आज्ञा मिले उसके प्रति मैं सर्वात्मना समर्पित रहूँ। धर्मसंघ के विकास में योगदान दे सकूँ।

साध्वीवर्या जी ने नवनियुक्त साध्वीप्रमुखाश्री जी के प्रति अपनी मंगलभावना प्रेषित करते हुए कहा कि परमपूज्य आचार्यप्रवर के प्रति हम अत्यंत कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं कि जो साध्वीप्रमुखाजी का स्थान रिक्त हो गया था, उसे आज पूर्ण कर दिया हैं मुख्य नियोजिका जी के जीवन को भी हमने देखा है। मेरे पर शुरू से कृपादृष्टि रही है। मेरे विकास में मुझे बड़ा सहयोग मिला है। वे हमारा पूरा ध्यान रखती हैं। मैं इनके प्रति मंगलकामना करती हूँ। मैं भी आपके कार्य में सहयोगी बनती रहूँ।

मुख्य मुनिप्रवर ने नवनियुक्त साध्वीप्रमुखाजी को मंगल बधाई देते हुए कहा कि जयाचार्य ने साध्वीप्रमुखा पद का सूत्रपात किया था, जिससे आचार्यों को काफी सहयोग प्राप्त होने लगा। आज आचार्यप्रवर ने महत्त्वपूर्ण घोषणा की है, जिससे पूरे साध्वी समाज में हर्ष की लहर दौड़ रही है, उन्हें साध्वीप्रमुखा मिल गई है। साध्वीप्रमुखाजी के जीवन में बौधिकता का विकास है। आपके जीवन के उज्ज्वल भविष्य के प्रति हार्दिक मंगलकामना।

नवनियुक्त साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा जी की अभिवंदना, मंगलकामना रूप में पूज्यप्रवर ने मंगलपाठ सुनाया। साध्वी समाज की ओर से वर्धापना पत्र का वाचन साध्वी जिनप्रभाजी ने किया। साध्वीवर्याजी ने वर्धापना पत्र समर्पित किया। साध्वीवृंद ने वर्धापना गीत का भी संगान किया। साध्वीप्रमुखाजी के संसारपक्षीय परिवार की ओर से ललित मोदी ने पूज्यप्रवर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।

पूज्यप्रवर के दीक्षा दिवस के अवसर पर सूजानमल दुगड़, सुमतिचंद गोठी ने पूज्यप्रवर के बालपन के संस्मरण सुनवाए। तेयुप, सरदारशहर ने सामूहिक गीत का संगान किया व नवीन नौलखा ने गीत की प्रस्तुति दी। अभातेयुप अध्यक्ष पंकज डागा ने युवा दिवस पर पूज्यप्रवर का वर्धापन किया। ज्ञानशाला की प्रस्तुति हुई।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने करते हुए समझाया कि शक्ति का उपयोग सही दिशा में करें। हम शक्ति को संयम में नियोजित करें।

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी बनी श्रमणीगण सिरमोर साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी

आज के दिन मेरे लिए सोने का सूरज उगा था—मुझे संयम रत्न मिला : आचार्यश्री महाश्रमण

युवादिवस पर पूज्यप्रवर ने धर्मसंघ को दिया साध्वीप्रमुखा रूपी उपहार

सरदारशहर, १५ मई, २०२२

उत्तम पुरुष, धर्म के सम्राट आचार्यश्री महाश्रमण जी ने आज प्रातः वृहद् मंगलपाठ के बाद फरमाया कि परिषद छः बजे तक यहीं तेरापंथ भवन में स्थित रहने का प्रयास करें। सूर्योदय के पश्चात् जब मुख्य नियोजिकाजी आदि साध्वियाँ गुरुदर्शन हेतु श्रीचरणों में उपस्थित हुई तब परमपावन ने फरमाया कि आज प्रवचन के समय साध्वीप्रमुखा का चयन करने का भाव है। पूरे तेरापंथ समाज में यह सुनकर खुशी की लहर दौड़ गई और अटकलें लग गईं कि पूज्यप्रवर ५६३ साध्वियों में से १३५ साध्वियाँ जो सरदारशहर में विराज रही हैं, उनमें से किसको साध्वीप्रमुखा के स्थान पर स्थापित करेंगे।

आज वैशाख शुक्ला चतुर्दशी है, आज ही के दिन परम वंदनीय आचार्यश्री महाश्रमण जी बालक मोहन के रूप में गुरुदेव तुलसी की आज्ञा से मुनि सुमेरमलजी 'लाडनूं' (मंत्री मुनि) के करकमलों से सरदारशहर के श्री समवसरण में दीक्षा हुई थी और बालक मोहन दीक्षित होकर मुनि मुदित बन गए थे।

आचार्यश्री महाश्रमणजी के दीक्षा दिवस को अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद युवा दिवस के रूप में मनाती आ रही है। बालक मोहन से बने मुनि मुदित कुमार, मुदित कुमार से महाश्रमण, महाश्रमण से युवाचार्य महाश्रमण और आचार्यश्री महाश्रमण की लंबी यात्रा है।

आचार्यश्री महाश्रमण जी का दीक्षा दिवस के साथ आज एक और इतिहास जुड़ गया—साध्वीप्रमुखा चयन का। ससीम को असीम बनाने वाले आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि आज वैशाख शुक्ला चतुर्दशी है। आज हाजरी का दिन हैं मेरे लिए आज अभिनिष्क्रमण का दिवस भी है।

मैंने आज से ठीक ४८ वर्ष पूर्व सरदारशहर में ही अपने संसारपक्षीय पींचा वास वाले घर से अभिनिष्क्रमण किया था, मुनि बनने के लिए। परम पूज्य आचार्य तुलसी के अनुग्रह से श्रद्धेय मुनि सुमेरमल जी स्वामी 'लाडनूं' ने मुझे और मेरे साथ दीक्षित होने वाले मुनि उदित कुमार जी स्वामी को दीक्षा प्रदान की थी।

उपचार को महत्त्व दिया जाए तो मेरे लिए आज का दिन बड़ा महत्त्वपूर्ण है। सोने का सूरज मेरे लिए उगा था कि मुझे संयम रत्न प्राप्त हुआ। मेरा संयम रत्न सुरक्षित रहे।

आज हाजरी का दिन है। हाजरी का वाचन किया। मर्यादाएँ और सिद्धांत समझाए। हमारा धर्मसंघ आज से २६२ वर्ष पहले शुरू हुआ था। आचार्य भिक्षु हमारे पहले आचार्य-अनुशास्ता हुए। उनकी उत्तरवर्ती आचार्य परंपरा चली। पूज्यप्रवर ने अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा आयोजित युवा दिवस पर मंगल आशीर्वचन फरमाया कि युवाओं में भी शक्ति का अच्छा निरवद्य उपयोग, धार्मिक उपयोग होता रहे। युवाओं में सामायिक आदि की व तप आदि की चेतना जागृत रहे। सब युवा अच्छा काम करें।

नवमी साध्वीप्रमुखा के रूप में मुख्य नियोजिका विश्रुतविभा जी की घोषणा

चौथे आचार्य श्रीमद्जयाचार्य ने साध्वियों की व्यवस्था का विधिवत रूप स्थापित किया कि साध्वी समाज में एक साध्वी को मुखिया बनाना चाहिए।

जयाचार्य ने साध्वी सरदारांजी को साध्वीप्रमुखा बनाया और वह परंपरा आगे चली। अंतिम साध्वीप्रमुखा साध्वी कनकप्रभाजी की नियुक्ति आचार्य तुलसी ने की थी। हमारे धर्मसंघ में सर्वोच्च साध्वीप्रमुखा भी एक होती है। साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी ने तो साधिक पचास वर्षों तक तीन-तीन आचार्यों के काल में सेवा दी थी। पिछले दो महीने पहले उनका भी दिल्ली में महाप्रयाण हो गया था। **(शेष पृष्ठ १४ पर)**

शासनश्री साध्वी गुणमालाजी का देवलोकगमन

भीलवाड़ा।

शासनश्री साध्वी गुणमालाजी का भीलवाड़ा में ११ मिनट में संथारे के साथ देवलोकगमन हो गया। भीलवाड़ा के मंदिरमार्गी संप्रदाय के पूनमचंद तलेसरा एवं माता फेफाबाई के परिवार में इनका जन्म हुआ। ननिहाल परिवार तेरापंथी होने की वजह से बालिका गुलाब का झुकाव तेरापंथ की ओर हो गया। पारिवारिक विरोध को सुयोग में बदलकर पारमार्थिक शिक्षण संस्था में प्रवेश लेकर शिक्षा प्राप्त की। साध्वी जीवन शासन गौरव साध्वी किस्तूरांजी के साथ ३५ वर्ष रही एवं सुदूर यात्राएँ की। उन्होंने अनेक गीतिकाएँ, नाटक, श्लोक आदि की रचना की। दो मासखमण, १५ तक की तपस्या की लड़ी, प्रतिवर्ष दो तेला, महिने में चार उपवास, आयंबिल आदि तपस्याएँ कीं। २००१ तारानगर मर्यादा महोत्सव पर आचार्य महाप्रज्ञ जी ने इन्हें अग्रगण्य बनाया। आपने अनेक लोगों को बारहव्रती व अणुव्रती बनाया। अग्रगण्य के रूप में मारवाड़, मेवाड़, थली, मध्य प्रदेश व महाराष्ट्र की यात्रा की। ५ अप्रैल, २०२२ को आचार्यप्रवर से आज्ञा प्राप्त कर सागारी संथारा करवाया गया। ६ अप्रैल, २०२२ को प्रतिक्रमण के दौरान संथारा करवाया एवं कुछ मिनटों के पश्चात ६३ वर्ष के संयम पर्याय के साथ शासनश्री साध्वी गुणमालाजी का देवलोकगमन हो गया।

शासनश्री साध्वी हुलांसाजी का देवलोकगमन

देशनोक।

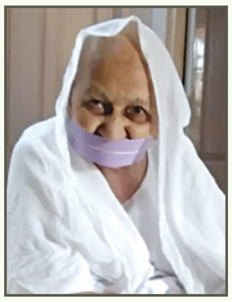

शासनश्री साध्वी हुलांसाजी का १६ मई, २०२२ रात्रि ११:१५ बजे देवलोकगमन हो गया। चैत्र कृष्णा चतुर्थी वि०सं० १९८९ को माता मनोहरी देवी पिता ऊमचंद जी मुगड़ी की कुक्षि से आपका जन्म हुआ। दीर्घ तपस्विनी साध्वी अणचांजी जो कि आपके संसारपक्षीय मौसीजी थे उनकी प्रेरणा से आपके भीतर वैराग्य बीज का अंकुरण हुआ और मंत्रीमुनिश्री मगनलालजी स्वामी के सहयोग से साढ़े बारह वर्ष की लघुवय में गुरुदेव तुलसी के मुख कमल व करकमल से संयम रत्न प्राप्त हुआ। गुरुदेव तुलसी की कृपा से दीर्घ तपस्विनी साध्वी अणचांजी के साथ आपको बीस वर्ष गुरुकुलवास में रहने का सुंदर अवसर प्राप्त हुआ। इस दौरान आपने मुंबई व कोलकाता की यात्रा भी की। वि०सं० २०३१ मर्यादा महोत्सव के पश्चात गुरुदेव तुलसी ने आपको अग्रणी बनाया। इस दौरान आपने राजस्थान, मध्यप्रदेश, पंजाब, हरियाणा के अनेक क्षेत्रों की यात्राएँ की।

आपके सिद्धांत व तत्त्वज्ञान भी अच्छा था। अध्ययन व स्वाध्याय की रुचि थी। आपकी रसना-विजय अद्भुत थी। ४० वर्ष की लघुवय से अंतिम अवस्था तक आपने पूरे दिन में दवाई, पानी को छोड़कर ७ साल द्रव्यों का ही उपयोग किया। वैशाख शुक्ला पूर्णिमा के दिन-रात ११:१५ पर ८९ वर्ष की अवस्था में देशनोक में आपका प्रयाण हो गया। अंतिम समय में आपकी समता अनुकरणीय थी।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
23 - 29 मई, 2022

✦ मनुष्य जन्म को दुर्लभ कहा गया है। जिन्हें यह प्राप्त है, वे मनुष्य जन्म का मूल्यांकन करना सीखें।
—आचार्यश्री महाश्रमण

नव-मनोनीत साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी एक परिचय

अभिनन्दन है आत्मा के अद्‌भुत प्रकाश का।
अभिनन्दन है गुरुनिष्ठा की भीनी सुवास का।।

जीवन की हर भोर नए स्वस्तिक रच जाए।
अभिनन्दन है आरोहण के नव उजास का।।

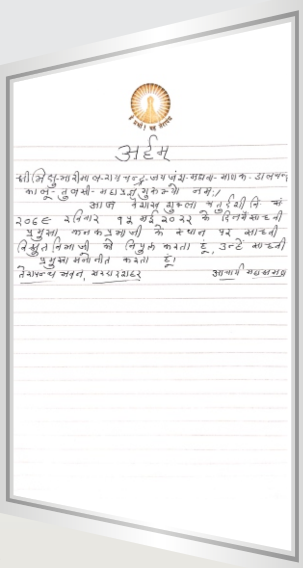

अर्हम्

श्री भिक्षु-भारीमाल-रायचन्द्र-जय-मघवा-माणक-डालचन्द-कालू-तुलसी-महाप्रज्ञ गुरुभ्यो नमः।
आज वैशाख शुक्ला चतुर्दशी वि. सं. २०७९ रविवार १५ मई २०२२ के दिन मैं साध्वी प्रमुखा कनकप्रभाजी के स्थान पर साध्वी विश्रुतविभाजी को नियुक्त करता हूं, उन्हें साध्वी प्रमुखा मनोनीत करता हूं।
तेरापंथ भवन, सरदारशहर
आचार्य महाश्रमण

भाग्य और पुरुषार्थ का योग जीवन को उच्चता प्रदान करता है। नवमनोनीत साध्वी प्रमुखा विश्रुतविभाजी का जीवन भाग्य और पुरुषार्थ की अदभुत युति है। जीवन में समय-समय पर इन्होंने गुरु-कृपा का जो प्रसाद प्राप्त किया, कोई विरल भाग्यवान व्यक्ति ही प्राप्त कर सकता है। प्रबल पुण्यवत्ता के बावजूद इनके जीवन में पुरुषार्थ की लौ सदा प्रज्वलित रही। हर परिस्थिति में सकारात्मक सोच, साधना के प्रति गहरा आकर्षण और सम्यक् पुरुषार्थ ने आपकी विकास यात्रा के मार्ग को निर्बाध और प्रशस्त बनाया।

साध्वी प्रमुखा विश्रुतविभाजी का जन्म- २७-११-१६५७ को तेरापंथ की राजधानी लाडनूं शहर के प्रसिद्ध मोदी परिवार में आपका जन्म हुआ। आपके संसारपक्षीय पिता का नाम श्रीमान जंवरीमलजी मोदी एवं माता का नाम श्रीमती भंवरी देवी था। आठ भाइयों एवं पांच बहनों से भरे-पूरे परिवार में पलकर भी आपके जीवन में चंचलता कम और गंभीरता का पुट ज्यादा रहा। संसारपक्षीया मौसी स्वर्गीया साध्वी चन्द्ररेखाजी की प्रेरणा वैराग्य का प्रबल निमित्त बनी। घर में हायर सैकेण्डरी की परीक्षाएं उत्तीर्ण करने के बाद आप पारमार्थिक शिक्षण संस्था में प्रविष्ट हो गयी, जहां आपका नाम रखा गया- मुमुक्षु सविता। मुमुक्षु सविता ने लगभग छह वर्षों तक पारमार्थिक शिक्षण संस्था में अध्ययन किया। साधना और स्वाध्याय के प्रति गहरी अभिरुचि एवं सतत अप्रमत्तता ने आपके व्यक्तित्व को नई पहचान दी।

प्रथम समणी नियोजिका - तेरापंथ के नवम अधिशास्ता आचार्यश्री तुलसी ने सन् १६८० में समणश्रेणी का प्रवर्तन किया। सन् १६-११-८० के दिन प्रथम बार में दीक्षित होने वाली छह मुमुक्षु बहनों में एक नाम मुमुक्षु सविता का था। आपका नया नामकरण हुआ- समणी स्मितप्रज्ञा। दीक्षा के दो सप्ताह बाद आचार्यश्री तुलसी ने समणी स्मितप्रज्ञा को प्रथम समणी नियोजिका नियुक्त कर समण श्रेणी की देखरेख का दायित्व सौंपा। छह वर्ष के सफल कार्यकाल की परिसंपन्नता के बाद चार वर्षों तक पारमार्थिक शिक्षण संस्था में निर्देशिका के रूप में अपनी महत्त्वपूर्ण सेवाएं प्रदान की। समणश्रेणी में प्रथम विदेशयात्रा का और उसके बाद भी अनेक बार अनेक देशों की यात्रा करने का सुअवसर प्राप्त हुआ, उन देशों में कुछ नाम इस प्रकार है- अमेरिका, जर्मनी, स्विट्जरलैण्ड, ईटली, इंग्लेण्ड, बैंकोक, कनाडा, होलेण्ड, हॉगकांग आदि। समण श्रेणी में १२ वर्षों तक आपने अध्ययन किया, साधना की, व्यवस्थाओं का संचालन किया, देश-विदेशों की यात्राएं की और जीवन के हर क्षण को आनन्द के साथ जीने का प्रयास किया।

श्रेणी आरोहण - १८ अक्टूबर सन् १६६२ के दिन आपने श्रेणी आरोहण किया। परमपूज्य आचार्यश्री तुलसी के श्रीमुख से साध्वी दीक्षा स्वीकार की। कार्तिक कृष्णा सप्तमी के दिन इक्कीस भव्य आत्मओं ने साधुत्व को स्वीकार किया। आचार्यश्री तुलसी ने समणी स्मितप्रज्ञा का नाम रखा- साध्वी विश्रुतविभा।

आगम अध्ययन एवं साहित्य संपादन - साध्वी विश्रुतविभाजी ने दीक्षा ग्रहण करने के बाद एक नयी यात्रा शुरू की। आपने आगम अध्ययन, आगम-संपादन के साथ-साथ आचार्यश्री महाप्रज्ञ की अनेक साहित्यिक कृतियों का आलेखन एवं संपादन किया है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ के प्रवचन साहित्य के संपादन में आपकी विशेष भूमिका रही है। परमपूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आचार्यश्री महाप्रज्ञ के विशाल साहित्य को 'महाप्रज्ञ वाङ्मय' के रूप में प्रस्तुत करने का तथा २१ पुस्तकों के अंग्रेजी भाषा में अनुवाद का सपना देखा और उस कार्य के समायोजन का मुख्य दायित्व आपको सौंपा।

आपने जैन आगमों में 'आत्मवाद' से संबंधित विषयों के संकलन का कार्य भी संपन्न किया जो 'आयावाओ' नाम से विशाल ग्रंथ के रूप में प्रकाशित हो चुका है। छेदसूत्रों में विशेष रूप से 'दसाओ' का कार्य आपने किया। आचार्यश्री महाप्रज्ञ के जीवनवृत्त पर महाप्रज्ञ प्रबोध की रचना की। आचार्यश्री महाप्रज्ञ की अनेक कृतियों का आपने अंग्रेजी अनुवाद किया है। अंग्रेजी भाषा में तो अनेक कृतियों का लेखन भी किया है, जिनमें कुछ नाम इस प्रकार हैं-

An Introduction to Jainism
An Introduction to Terapanth
An Introduction to Preksha Meditation
Basics of Jainism
Truth of Present
Acharya Shree Tulsi Legend of Humanity
Journey of Spiritual Heights : Life and Times of Acharya Mahapragya

प्रबंधन-प्रशासन में सहभागिता - आचार्यश्री महाप्रज्ञ का सन् १६६८ का मर्यादा महोत्सव चाड़वास में था। उस समय परमपूज्य गुरुदेव श्री 'तुलसी' लाडनूं जैन विश्व भारती में विराजित थे और साध्वी प्रमुखा कनकप्रभाजी भी गुरुदेव की उपासना में थी। उस समय चाड़वास में आचार्यश्री महाप्रज्ञ की सन्निधि में साध्वियों की व्यवस्था का दायित्व मुख्य रूप से आपने संभाला। टोहाना मर्यादा महोत्सव पर, उसके बाद दिल्ली चतुर्मास में, धुरी मर्यादा महोत्सव के बाद पंजाब यात्रा में, आचार्यश्री महाश्रमणजी की गंगानगर यात्रा, काठमांडो एवं शिलौंग यात्रा, जगदलपुर यात्रा एवं कोटा यात्रा आदि ऐसे अनेक अवसर आए जब साध्वी प्रमुखा कनकप्रभाजी की अनुपस्थिति में आपने सारी व्यवस्थाओं का बड़ी कुशलता से निर्वहन किया।

अलंकरण बख्शीश -

- सन् १६६६ में परम पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने टोहाना मर्यादा महोत्सव के अवसर पर आपको समुच्चय के कार्यों की बख्शीश की।
- सन् २००५ में दिल्ली चतुर्मास में पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने समण श्रेणी की मुख्य नियोजिका के रूप नियुक्त किया।
- सन् २००६ में धुरी मर्यादा महोत्सव पर साध्वी प्रमुखा के बाद दूसरे स्थान पर मुख्य नियोजिका के रूप में नियुक्त किया तथा परिचर्या में एक वर्ग की नियुक्ति की।
- सन् २०१० में आचार्यश्री महाश्रमणजी ने बहुश्रुत परिषद् की माननीया सदस्या के रूप में नियुक्त किया।
- सन् २०१६ में आचार्यश्री महाश्रमणजी ने गुवाहाटी चतुर्मास में कुर्सी पर बैठने की बख्शीश की।
- सन् २०१७ में भागलपुर अक्षय तृतीया के अवसर पर आचार्यश्री महाश्रमणजी ने साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभाजी की अनंतर सहयोगी के रूप में मुख्य नियोजिका के पद पर प्रतिष्ठित किया।

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के शासनकाल में और वर्तमान में आचार्यश्री महाश्रमणजी के निर्देशानुसार वर्षों तक आपने संघसेवा में अपनी शक्ति का नियोजन किया है।

स्वाध्याय, ध्यान एवं तप की त्रिपथगा- साधना का एक उपक्रम है- स्वाध्याय। साध्वी प्रमुखा विश्रुतविभाजी की स्वाध्यायप्रियता अनुकरणीय है। स्वाध्याय का क्रम बाधित न हो, इसलिए आप लंबी तपस्याएं तो नहीं करती पर तेला, बेला, उपवास, आयंबिल, अन्नपरिहार आदि आपके लिए बहुत सामान्य है। अनाहार की साधना के साथ-साथ आपकी अप्रमत्त जीवनशैली 'सोने में सुहागा' की उक्ति को चरितार्थ कर रही है।

साध्वी प्रमुखा पद पर नियुक्ति - आचार्यश्री महाश्रमण ने शासन-माता साध्वी प्रमुखा कनकप्रभाजी के महाप्रयाण के कुछ ही दिन बाद साध्वियों की सारी व्यवस्थाओं एवं देखरेख की जिम्मेदारी आपको सौंपी। दो माह पश्चात् आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अपने ४६वें दीक्षा दिवस के मंगल अवसर पर साध्वी विश्रुतविभाजी को तेरापंथ की नवम साध्वी प्रमुखा के रूप में नियुक्त किया। साध्वी प्रमुखा की नियुक्ति नवीनता लिए हुए थी। पूज्यवर ने जिस गरिमामय ढंग से नियुक्ति की, साध्वी समाज के गौरव में मानों चार चांद लगा दिए।

आचार्यश्री महाश्रमणजी ने साध्वी प्रमुखा के रूप में जैसे ही साध्वी विश्रुतविभाजी के नाम की उदघोषणा की, पूरा हॉल ओम् अर्हम् की हर्ष ध्वनि से गूंज उठा। आचार्यवर ने साध्वीवर्या संबुद्धयशाजी आदि साध्वियों को साध्वी प्रमुखा को ससम्मान मंच पर लाने का निर्देश दिया, अपने पवित्र कर-कमलों से नियुक्ति पत्र, अपनी निश्रा का रजोहरण एवं प्रमार्जनी प्रदान की और ऊर्जामय ग्रास प्रदान कर मानो अपनी अखण्ड ऊर्जा आप तक सम्प्रेषित कर दी। नवमनोनीत साध्वी प्रमुखा विश्रुतविभाजी निरामय रहें। गुरु इंगित की आराधना करती हुई सम्पूर्ण धर्मसंघ के हितसम्पादन में अपनी शक्ति का नियोजन करती रहे। आपका मंगलमय भविष्य संघ के लिए हितावह हो, यही हमारी अभिलाषा है।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**